हिन्दुओं पर बुलडोजर 6

सर्वोच्च न्यायालय ने सुधारी अपनी गलती 7

लगातार बैठने से गड़बड़ा रहे हैं हार्मोन्स 16

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

ज्येष्ठ शु.12, वि. 2080, युगाब्द 5125, 1 जून, 2023

आंदोलन की राह पर जनजाति

18 जून को 'डी-लिस्टिंग हुंकार महारैली'

patheykan@gmail.com

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें
(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- **प्राचीन भारत की गुरु शिष्य परम्परा**
  https://patheykan.com/?=20628
- **मणिपुर हिंसा : आतंकवाद व कन्वर्जन का षड्यंत्र**
  https://patheykan.com/?=20619
- **दिवेर का युद्ध**
  https://patheykan.com/?=11189

बाबा साहब अंबेडकर

डॉ. अंबेडकर जी के लेख में इस्लाम संबंधी और राष्ट्रीय

विचार पढ़कर ध्यान में आया कि बाबा साहब ने केवल दलित और पिछड़े समाज का ही कार्य नहीं किया अपितु संपूर्ण राष्ट्र के कल्याण और हितार्थ जीवनपर्यंत कार्य करते रहे। भीम-मीम एकता की बात करने वाले आज बाबा साहब के जीवन को अनपढ़ा करके बात कर रहे हैं क्योंकि उनकी पुस्तक 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' के अनुसार मुसलमानों के लिए हिंदू काफिर हैं और काफिर सम्मान के योग्य नहीं है। यह हम सबको समझना होगा जिससे समाज में सामाजिक समरसता बढ़ सके।

▪ ***महिपाल केसरी,***
पडासला, जोधपुर

संपादकीय

1 मई के अंक में कौन थे अपने? इस भारत के अपने ?

संपादकीय पढ़ा। भारत के योद्धा जिन्होंने मुगलों के विरुद्ध युद्ध किया उनका विस्तृत इतिहास पाठ्य-पुस्तकों में शामिल होना चाहिए। इससे युवा पीढ़ी के मन में भारतीय इतिहास के प्रति सम्मान व गर्व का भाव उत्पन्न होगा।

महाराणा प्रताप, राणा कुम्भा, पृथ्वीराज चौहान, छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे भारतीय वीरों का सच्चा सम्मान यही होगा कि हमारी नई पीढ़ी इनके बारे में जानें तथा उन्हीं की तरह अपने धर्म व राष्ट्र की रक्षा करे।

▪ **हरिप्रसाद पारीक,**
पचार, सीकर

डिजिटल डिटॉक्स

1 मई के अंक में 'डिजिटल डिटॉक्स' पर पढ़ा। इंटरनेट दैनिक जीवन को सरल बनाता है लेकिन इसकी अत्यधिक आदत एक बीमारी बन गई है। जैसे उपवास करके शरीर को डिटॉक्सिफाई किया जाता है उसी प्रकार डिजिटल डिटॉक्स भी स्वस्थ तन और मन के लिए जरूरी बन गया है। एक अमेरिकी रिपोर्ट के अनुसार लगभग 61 प्रतिशत लोग इंटरनेट और उनके उपकरणों के आदी होने की बात स्वीकार करते हैं। 10 में से एक इंटरनेट उपयोगकर्ता के डिप्रेस्ड होने की संभावना 2.5 गुना अधिक है, इसे गंभीरता से लेना चाहिए।

▪ ***मणि,*** *जयपुर*

।। ॐ ।।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राजस्थान

संकलन सहयोगार्थ निवेदन

1940 से राजस्थान में विधिवत संघ कार्य प्रारंभ हुआ। इस संघ-यात्रा में अनेक प्रचारक एवं गृहस्थ कार्यकर्ता लगे। इस यात्रा के हम भी अपने समय के सहयात्री रहे हैं। संघ के सीधे संपर्क में न रहने वाले भी अनेक लोग व परिवार भी इन स्मृतियों से जुड़े हैं। हम या हमारे परिचित लोगों के पास संघ के क्रमिक विकास, प्रमुख प्रचारक, गृहस्थ (संघ व विविध संगठन) कार्यकर्ताओं के प्रेरक-प्रसंग, व्यक्तिगत वार्तालाप, पत्र- व्यवहार, छायाचित्र, अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचार, अभिलेखागारों, गजट, शासकीय अभिलेख के उल्लेख, बौद्धिक व बैठकों के बिंदु, संघ, विविध संगठनों के विशेष कार्यक्रम, ऑडियो-वीडियो, डायरी, पत्रक आदि उपयोगी सामग्री हो सकती है। संघ शताब्दी वर्ष में समाज व स्वयंसेवकों की नई पीढ़ी के समक्ष प्रेरक, अधिकृत व व्यवस्थित जानकारी लाना इस संकलन का उद्देश्य है। इसके महत्व को समझते हुए हम उपरोक्त सामग्री शीघ्रातिशीघ्र अपने प्रांत से संबंधित कार्यकर्ताओंके माध्यम से उपलब्ध कराएंगे। इसे अधोलिखित ई-मेल पर भिजवाए या दिए गए संपर्क सूत्रों पर सूचना करें, ताकि आपसे व्यक्तिगत मिलकर सामग्री का संकलन किया जा सके- e-mail : sanghitihas@gmail.com

जिनके बारे में संस्मरण संकलन का सोचा है

1. श्री विश्वनाथ जी लिमये
2. श्री ब्रह्मदेव जी
3. श्री सोहन सिंह जी
4. श्री किशन भैय्या जी
5. श्री भँवर सिंह जी
6. श्री लक्ष्मण सिंह जी
7. श्री नरमोहन जी
8. श्री सूरजप्रकाश जी
9. श्री जयदेव जी पाठक
10. श्री सुन्दर सिंह जी भण्डारी
11. श्री धनप्रकाश जी
12. श्री ज्योति स्वरूप जी
13. श्री ठाकुरदास जी टण्डन
14. श्री गोपीचन्द जी
15. श्री मोहन जी जोशी
16. श्री बच्छराज जी व्यास
17. श्री हस्तीमल जी
18. श्री दादाभाई गिरिराज जी शर्मा
19. श्री नारायण सिंह जी
20. श्री मोती सिंह जी राठौड़
21. श्री ओमप्रकाश जी आर्य
22. श्री रामराज जी व्यास
23. श्री गोविन्दराम जी हुकमाणी
24. श्री मूलचन्द जी अजमेरा
25. श्री सत्यपाल जी हर्ष
26. श्री जसवंत सिंह जी
27. श्री देवकृष्ण जी कौशिक
28. श्री जयबहादुर सिंह जी
29. श्री राधाकृष्ण जी रस्तोगी
30. श्री धर्मवीर जी उदयपुर
31. श्री श्रीनाथ जी राव, जयपुर

- सम्पर्क सूत्र -

जयपुर प्रांत : श्री रमेश जी पारीक, दौसा 9460961917, श्री प्रदीप जी शेखावत, जयपुर- 9460167700, श्री गोपाल जी शर्मा, जयपुर - 9829051742, **जोधपुर प्रांत:** श्री मोतीलाल जी, बिलाड़ा - 9413570799, श्री भागीरथ जी चौधरी, बाड़मेर - 9672128653, **चित्तौड़ प्रांत:** श्री रमेश जी शुक्ल, उदयपुर - 9413218261, श्री सत्यनारायण जी, भीलवाड़ा - 9929185306,
केंद्रीय कार्यालय, अभिलेखागार कक्ष, पाथेय भवन, मालवीय नगर, जयपुर

- : सम्पर्क सूत्र : -

श्री मोहन जोशी (9414103558) श्री ब्रजमोहन (9783804236)
आपके सहयोग की अपेक्षा में
डॉ. रमेश अग्रवाल, क्षेत्र संघचालक, रा.स्व.संघ, राजस्थान

पाथेय कण

पाक्षिक
पाथेय कण

ज्येष्ठ शुक्ल 12 से
आषाढ़ कृष्ण 12 तक
विक्रम संवत् 2080,
युगाब्द 5125
1-15 जून, 2023
वर्ष : 39
अंक : 04

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध संपादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राजस्थान)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर संपर्क करें-
व्हाट्सएप से
79765 82011
फोन से
94136 45211
99297 22111

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

हिन्दुत्व जागरण का असर

यह तो निश्चित ही है कि स्वाधीनता के संघर्ष में हिंदू समाज की सहभागिता मुख्य रूप से रही है। परंतु हिंदू, हिंदू के नाते मुखर नहीं था। वह आत्मविस्मृत हो चुका था। जातिगत भाव मुखर होने के कारण हिन्दुत्व का भाव भी नहीं था उसमें। हिंदू धर्म और संस्कृति अपने दर्शन और व्यवहार में सेक्युलर (पंथनिरपेक्ष) होने के कारण स्वतंत्रता-संघर्ष में हिंदू कांग्रेस के साथ था, न कि हिंदू महासभा के साथ। परंतु अधिकांश मुस्लिम तबका मुस्लिम लीग के साथ था। इसलिए अंग्रेज सरकार कांग्रेस और मुस्लिम लीग से ही वार्ता करती थी। मुस्लिम लीग भी कांग्रेस को 'हिंदू पार्टी' ही मानती थी, परंतु कांग्रेस के नेताओं पर सेक्युलरिज्म का भूत सवार था।

जब यह तय हुआ कि मुस्लिम बहुल इलाके भारत से टूटकर पाकिस्तान बनेंगे तो हिंदू यह कह नहीं पाया कि बचा हुआ भाग हिंदू देश बने। कांग्रेस तो मुस्लिम तुष्टिकरण पर बरसों से चल रही थी। उसके नेताओं को यह समझ ही नहीं आई कि 'तुष्टिकरण की नीति' फेल (असफल) हो गई है, अत: बचे हुए भारत को हिंदू देश माना जाए। बाबा साहब अंबेडकर एक मात्र ऐसे राजनैतिक नेता थे जो कह रहे थे कि विभाजन होने पर सारे मुसलमान उधर जाएं और सारे हिंदू इधर। परंतु उनकी किसी ने मानी नहीं।

परिणाम हुआ कि स्वाधीनता के बाद देश के हिंदू में हिन्दुत्व का स्वाभिमान और भी कम हो गया। कांग्रेस व अन्य दलों ने भी हिंदू में जातिवाद को उभारा। जब हिंदू जातियों में बंटा तो मुस्लिम समाज देश में मतदाताओं का सबसे बड़ा समूह बन गया। इसलिए वोटों की राजनीति के चलते कांग्रेस सहित अधिकांश दलों ने मुस्लिमों की पसंद-नापसंद का पूरा ध्यान रखा। मुसलमानों की इफ्तार पार्टी या जलसे में नेता जाते रहे। जाति विशेष के या कर्मचारियों के होली-दीपावली मिलन में भी जाते रहे, परंतु जो सभा या कार्यक्रम हिंदू समाज के नाते होते, उससे दूरी बनाए रखी।

जिन महापुरुषों ने मुगलों या अन्य मुस्लिम आक्रांताओं से संघर्ष किया, उन्हें साम्प्रदायिक मानकर उनकी चर्चा करनी लगभग बंद कर दी। उनमें और मुगल या अन्य मुस्लिम आक्रांताओं में उन्हें कोई फर्क दिखाई नहीं दिया। दिखाई दिया भी होगा, तो आंखें मूंद लीं।

जब राजस्थान कांग्रेस के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने एक वर्ष पूर्व कहा था कि महाराणा प्रताप और अकबर के बीच लड़ाई सत्ता के लिए थी, तो उन्होंने वोटों के लिए तुष्टिकरण की राजनीति के चलते स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले महाराणा प्रताप को 'सत्ता के लिए लड़ने वाला' बता दिया। 2018 में कांग्रेस जब राज्य में सत्तारूढ़ हुई तो उसका मुस्लिम प्रेम और पूर्व भूमिका फिर से मुखर हो उठी। हो सकता है कि राज्य के वाम-श्यूडो सेकुलर गैंग ने कांग्रेस को उसकी इस भूमिका की याद दिलाई हो। इसलिए राजस्थान बोर्ड की कक्षा 10 समाज विज्ञान की पुस्तक में महाराणा प्रताप से संबंधित पाठ का 40 प्रतिशत भाग कम कर दिया। इतना ही नहीं तो उनके बारे में अपमानजनक उल्लेख उक्त पाठ्यपुस्तक में डाला। महाराणा प्रताप को हल्दीघाटी युद्ध में हारा दिखाकर उसके हारने के कारण गिनाए गए और लिखा कि महाराणा प्रताप में न तो धैर्य था और न ही संयम। उनमें योजना बनाने की क्षमता भी नहीं थी। पाठ्यपुस्तकों में फिर से अकबर को महान बता दिया गया। कांग्रेस के शिक्षामंत्री बीडी कल्ला से पूछा कि कौन था महान? अकबर या प्रताप? तो उन्होंने अपना मुँह सिल लिया, कुछ बोले नहीं।

ऐसी पृष्ठभूमि में जब बीती 22 मई को उदयपुर में आयोजित महाराणा प्रताप की जयंती कार्यक्रम में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत न केवल उपस्थित ही हुए वरन् उन्होंने 'महाराणा प्रताप बोर्ड' के गठन की भी घोषणा की तो बड़ा आश्चर्य हुआ। महाराणा प्रताप को मात्र सत्ता के लिए लड़ने वाला राजा बताने और उनमें धैर्य और संयम की कमी सहित कई कमियां बताकर पाठ्यपुस्तकों से 40 प्रतिशत उनका वर्णन हटा देने वाली सरकार के मुखिया गहलोत जी ने यह कहा कि महाराणा प्रताप के शौर्य के बारे में युवा पीढ़ी को जागरूक करने के लिए वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप बोर्ड का गठन किया जाएगा, तो विश्वास नहीं हुआ। कहीं दिन में सपना तो दिखाई नहीं दे रहा? आजकल राजस्थान सरकार के मंत्री और विधायक मंदिरों की कतार में दिखाई दे रहे हैं। सरकार की ओर से मंदिरों पर पताकाएं फहराई जा रही हैं। सहस्त्रघट की बातें हो रही हैं जबकि गत वर्ष करौली में रामनवमी की शोभायात्रा पर मस्जिद के पास वाले घरों से पत्थर फेंकने के आरोपी अभी भी खुले आम घूम रहे हैं।

यह 'यू टर्न' क्यों हुआ? गहराई से सोचेंगे तो पिछले कुछ समय से देश में हुए हिन्दुत्व जागरण के अलावा और कोई कारण दिखाई नहीं देगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हजारों-लाखों कार्यकर्ता गत 98 वर्षों से जो तपस्या और भगीरथ प्रयत्न कर रहे थे- हिन्दुत्व के जागरण का, वह फलीभूत होता दिखाई दे रहा है। हिंदू यदि हिंदू के नाते सोचना और व्यवहार करना जारी रखेगा तो हमें ऐसे ही और बदलाव भी निकट भविष्य में दिखाई देने वाले हैं। •

-रामस्वरूप अग्रवाल

जनजाति समुदाय क्यों है आंदोलित ?

1950 में एक ओर जहां, अनुसूचित जाति हेतु जारी सूची में मतांतरित ईसाई व मुसलमान को एससी में सम्मिलित नहीं किया गया, वहीं दूसरी ओर अनुसूचित जनजातियों की सूची में उक्त मतांतरितों को बाहर नहीं करके एसटी में सम्मिलित रखा गया। मूल रूप से यह एक भारी विसंगति है। इसके परिणामस्वरूप जहां मतांतरण की गति तीव्र हुई वहीं जनजातीय समुदाय को मिलने वाले आरक्षण व सुविधाओं पर भी मतांतरितों द्वारा कब्जा जाने लगा। अनुसूचित जनजाति के मतांतरित को एसटी सूची से बाहर कर इस विसंगति को दूर करने की मांग कर रहे हैं जनजाति समुदाय के लोग। यह मामला हिंदू जनजाति समुदाय की पहचान बचाए रखने का भी है।

भारत का संविधान न्याय और कल्याण के लिए कई प्रावधान करता है। इस क्रम में संविधान के अनुच्छेद 341 और 342 में क्रमशः हिन्दू समाज की अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए अखिल भारतीय एवं राज्यवार आरक्षण एवं संरक्षण के लिए महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा सूची जारी करने का प्रावधान हैं। ऐसी सूचियां सन् 1950 में जारी हुई।

इन सूचियों में हिंदू समाज की जिन जातियों का उल्लेख आया है वे ही जातियां एससी (अनुसूचित जाति) या एसटी (अनुसूचित जनजाति) के आरक्षण तथा अन्य सुविधाएं व लाभ प्राप्त करने की हकदार होती हैं।

यहां यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि हिंदू समाज की इन जातियों के किसी व्यक्ति को मतांतरित कराकर ईसाई या मुसलमान बना लिया जाता है तो भी क्या उसे पूर्व की भांति आरक्षण व अन्य सुविधाएं मिलती रहेंगी?

राष्ट्रपति महोदय द्वारा जारी 1950 के आदेश को देखने से स्पष्ट होता है कि एस सी (अनुसूचित जाति) वर्ग का व्यक्ति हिंदू से मतांतरित होकर अहिंदू हो जाने पर उसको एससी के नाते दी जाने वाली सभी सुविधाएं समाप्त हो जाती हैं।

वस्तुतः यही प्रावधान एसटी (अनुसूचित जनजाति) के लिए होना चाहिए, परंतु एसटी के लिए उक्त आदेश में यह प्रावधान नहीं रखा गया। परिणाम यह हुआ कि मतांतरित हिंदू जनजाति का व्यक्ति अब ईसाई या मुसलमान हो जाने के कारण अल्पसंख्यकों को मिलने वाली विशेष सुविधाओं का लाभ भी ले रहा है तथा जनजाति के लिए निर्धारित आरक्षण आदि का लाभ भी ले रहा है।

परिणामतः दो प्रकार की सुविधाओं का लालच दिखाकर ईसाई मिशनरीज जनजाति बन्धुओं को मतांतरित करने में लगी हुई हैं।

इस प्रकार एक ओर जहां, अनुसूचित जाति हेतु महामहिम राष्ट्रपति ने जब सूची जारी की तब, मतांतरित ईसाई एवं मुसलमान को एससी में सम्मिलित नहीं किया, वहीं दूसरी ओर अनुसूचित जनजातियों की सूची में उक्त मतांतरित लोग बाहर नहीं करके एसटी में सम्मिलित रखे गए। मूल रूप से यह एक भारी विसंगति है।

5 प्रतिशत मतांतरित ले रहे हैं 70 प्रतिशत लाभ

जनजाति नेता एवं पूर्व सांसद डॉ. कार्तिक उरांव ने 1968 में किए अपने अध्ययन में पाया कि 5 प्रतिशत मतांतरित ईसाई, अखिल भारतीय स्तर पर कुल एसटी की लगभग 70 प्रतिशत नौकरियां, छात्रवृत्तियां एवं शासकीय अनुदान ले रहे हैं।

संयुक्त संसदीय समिति की अनुशंसा

इस मूलभूत विसंगति को दूर करने के लिए संसद की संयुक्त संसदीय समिति का गठन हुआ जिसने अनुशंसा की कि अनुच्छेद 342 के अंतर्गत मतांतरित लोगों को एसटी की सूची से बाहर करने के लिए राष्ट्रपति के 1950 वाले आदेश में संसदीय कानून द्वारा संशोधन किया जाना जरूरी है। इस मसौदे पर तत्कालीन 348 सांसद गण का समर्थन भी प्राप्त हुआ था। परंतु सन् 1970 के दशक में इस हेतु विचाराधीन मसौदे पर कानून बनने से पूर्व ही लोकसभा भंग हो गई। यह एक दुःखद अध्याय है।

यह उल्लेखनीय है कि एसटी की पात्रता के लिए विशिष्ट प्रकार की संस्कृति जरूरी है। यह भारतीय मत है एवं भारतीय आदि विश्वास, आदि संस्कृति व आदिवासी संस्कृति का सार है।

यह प्रश्न विकास की प्रक्रिया में सबसे गरीब, दूरस्थ निवासी और बुनियादी समस्याओं से जूझते लगभग 12 करोड़ जनजातियों का है। एसटी हित के लिए पैसा, वनाधिकार कानून जैसे जल, जंगल, जमीन और जागरूकता के महत्वपूर्ण कानून भी ढंग से लागू नहीं हो पा रहे हैं।

2000 की जनगणना और 2009 का डॉ. जेके बजाज का अध्ययन भी इस गैर-आनुपातिक और दोहरा लाभ हड़पने की समस्या की विकरालता को उजागर करते हैं कि मतांतरित ईसाई एवं मुसलमान अनुसूचित जनजातियों के

अधिकांश सुविधाओं को हड़प रहे हैं और दोहरा लाभ ले रहे हैं।

28 लाख हस्ताक्षरों से ज्ञापन

सन् 2006 में जनजाति सुरक्षा मंच का गठन कर मतांतरित ईसाई एवं मुसलमान को अनुसूचित जनजाति की सूची से हटाने की एक सूत्री मांग को आगे बढ़ाया गया। इन प्रयासों के तहत 2009 में महामहिम राष्ट्रपति महोदय को 28 लाख हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन दिया गया।

सन् 2020 में डॉ. कार्तिक उरांव के जन्म दिवस, 29 अक्टूबर के अवसर पर व्यापक जनसंपर्क अभियान चलाया गया, जिसमें 288 जिलों में जिला कलेक्टर / संभागीय आयुक्तों के माध्यम से, 14 विभिन्न राज्यों के राज्यपाल व 7 राज्यों के मुख्यमंत्रियों से मिलकर, महामहिम राष्ट्रपति महोदय को ज्ञापन भेजा गया।

सड़क से संसद तक

जनजाति सुरक्षा मंच ने एक महाअभियान शुरू किया है जो सड़क से संसद तक और सरपंच से सांसद तक संपर्क हेतु चल रहा है।

पूरे देश की सभी जनजातियां एवं अखिल समाज इस बात को लेकर चिंतित है और जनजाति सुरक्षा मंच ने उक्त विसंगति को सभी के समक्ष रखा है।

इस क्रम में ग्राम संपर्क कर देशभर में जिला सम्मेलनों का भी आयोजन किया जा रहा है। विगत दिनों दिल्ली में जनजाति सुरक्षा मंच के कार्यकर्ताओं ने सांसद संपर्क महाअभियान किया है जिसमें 480 से अधिक सांसदों से संपर्क कर डी-लिस्टिंग का कानून बनाने का आग्रह किया है। इन संपर्कित सांसदों में राजस्थान के 35 सांसद भी सम्मिलित हैं।

इस एक सूत्रीय अभियान को लेकर जनजाति सुरक्षा मंच तब तक तक संघर्ष करेगा जब तक मतांतरित ईसाई और मुसलमानों को एसटी की पात्रता और परिभाषा से बाहर नहीं निकाला जाता और इस हेतु संसद द्वारा 1970 से लंबित कानून नहीं बना दिया जाता।

इस क्रम में राजस्थान में 5 हजार 500 जनजाति ग्रामों में संपर्क किया जाकर 14 जिलों में जिला सम्मेलन आयोजित किए हैं जो लोकतांत्रिक तरीके से संघर्ष को आगे बढ़ाएगा। इस संघर्ष हेतु सभी राजनीति दल, एनजीओ, युवाओं, महिलाओं, सर्व समाज और समाज के मुखियाओं से सहयोग, सहकार और समन्वय के जरिए बाबा साहब के बताये पथ अनुसार शिक्षित बनने, संगठित होने व संघर्ष को आगे बढ़ाने का आग्रह किया गया है।

उदयपुर में 18 जून को होगी जनजाति समाज की

'डी-लिस्टिंग हुंकार महारैली'

आएंगे एक लाख जनजाति-बन्धु

जनजाति समाज का अस्तित्व आज खतरे में है। जनजातीय बन्धुओं को मतांतरित करने में कई ताकतें लगी हुई हैं। विदेशों से उन्हें अपार धनराशि इस कार्य के लिए मिल रही है। जनजाति बन्धु धर्म बदल लेता है तो उसे जन-जाति सुविधाओं के साथ ही अल्पसंख्यक-सुविधाएं मिलने लगती हैं। मूलत: एससी, एसटी के लिए आरक्षण आदि के प्रावधान उनके हिंदू समाज के एक हिस्से के रूप में उनको विकास की दौड़ में बराबरी पर लाने के लिए ही किए गए थे। इसलिए जनजाति-समाज मांग कर रहा है कि जिसने धर्म बदल लिया उसे जनजाति-समाज का न माना जाए, उसकी जनजाति के नाते दी जाने वाली सुविधाएं, लाभ, आरक्षण आदि बंद कर दिए जाएं। 'मतांतरित जनजाति' को 1950 में जारी एसटी की सूची से हटा दिया जाए। इसको 'डी-लिस्टिंग' कहा गया है। इसी मांग पर जोर देने के लिए राजस्थान का जनजाति-समाज अपने अस्तित्व की रक्षार्थ उदयपुर में महारैली कर रहा है। यह महारैली जनजाति समाज के हक और उनकी संस्कृति को बचाने के लिए आहूत की जा रही है। जनजाति सुरक्षा मंच राजस्थान के बैनर तले होने वाली इस 'डी-लिस्टिंग हुंकार महारैली' के संयोजक श्री नारायण गमेती ने बताया कि इस महारैली में पूरे राजस्थान से जनजाति समाज के लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा एवं वाद्य यंत्रों के साथ एकत्र होंगे। सभा स्थल पर पहले सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी जाएंगी।

आएंगे एक लाख जनजाति-बन्धु

हल्दीघाटी युद्ध दिवस 18 जून को उदयपुर के गांधी मैदान में सायं 4 बजे से जनजातीय समाज की होने जा रही 'डी-लिस्टिंग हुंकार महारैली' में एक लाख जनजाति बंधु आने वाले हैं।

राजस्थान की 80 प्रतिशत जनजाति समाज दक्षिण राजस्थान में निवास करने के कारण ही 18 जून को उदयपुर में महारैली की जा रही है।

स्वागत को तैयार है उदयपुर

अपने जनजातीय बन्धु-बांधवों का स्वागत करने के लिए उदयपुर शहर के घर-घर से भोजन के पैकेट्स एकत्रित करके महारैली में आने वाले बन्धुओं के भोजन की व्यवस्था की जाएगी ताकि शेष समाज भी महारैली के उद्देश्य और जनजाति-समाज से जुड़ाव महसूस कर सके।

जैसलमेर में हिन्दुओं पर चलाया बुलडोजर

राजस्थान के जैसलमेर जिले में स्थित अमर सागर इलाके में रह रहे हिंदू परिवारों के घरों को बुलडोजर से रौंद दिया गया। ये हिंदू परिवार पाकिस्तान से विस्थापित होकर भारत आए थे और लंबे समय से यहां रह रहे थे। उल्लेखनीय है कि तीन सप्ताह पहले जोधपुर में भी विस्थापित हिन्दुओं के घरों पर बुलडोजर चला था। भले ही ये विस्थापित हिंदू परिवार सरकारी जमीन पर रह रहे थे, क्योंकि इनके पास रहने के लिए अपनी कोई भूमि नहीं है, लेकिन राजस्थान में सक्षम और प्रभावशाली लोगों द्वारा सरकारी जमीन के अतिक्रमण के मामलें क्या कम है? करोड़ों-अरबों की सरकारी जमीन खाली कराने के लिए कोई बुलडोजर राजस्थान सरकार ने अभी तक नहीं चलाया। जबकि पाकिस्तान में हो रहे अत्याचारों से पीड़ित ये हिंदू विस्थापित कितनी सरकारी जमीन पर रह रहे होंगे? फिर भी उन पर बुलडोजर चलाना किस मानसिकता को प्रकट करता है, यह आसानी से समझा जा सकता है?

जिला कलेक्टर के आदेश के बाद सहायक अभियंता की अगुवाई में पाकिस्तानी हिन्दुओं के घरों पर बुलडोजर चलाया गया। कार्रवाई का इन हिंदू परिवारों की महिलाओं ने विरोध भी किया, लेकिन भारी पुलिस बल के साथ पहुंची प्रशासन की टीम ने इनके घरों को गिरा दिया। आश्चर्य की बात ये है कि एक तरफ दिसम्बर, 2021 तक अवैध बसी कच्ची बस्तियों के निवासियों को सरकार पट्टे देने जा रही है, वहीं दूसरी ओर बरसों से रह रहे इन विस्थापित हिन्दुओं पर बुलडोजर का कहर बरपाया जा रहा है, जबकि नेहरू-लियाकत समझौते के अनुसार सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है कि पाकिस्तान से आए इन विस्थापितों के लिए आवास और सुरक्षा का प्रबंध किया जाना चाहिए।

पाकिस्तान में सताए गए हिंदू बड़ी संख्या में राजस्थान में बॉर्डर के पास के जिलों में आकर बसे हुए हैं। हालांकि कार्रवाई के विरोध में धरने पर बैठे इन हिंदू परिवारों को बाद में प्रशासन ने आश्वासन दिया कि उन्हें रैन बसेरे उपलब्ध करवाए जाएंगे,जिसके बाद उन्होंने धरना समाप्त किया। इसी मामले में, राज्य के नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने सीएम अशोक गहलोत को पत्र लिखकर इन घटनाओं की उच्चस्तरीय जांच कराने और जन घोषणा पत्र में पाक विस्थापितों को लेकर की गई घोषणा की क्रियान्विति करने की मांग की है।

राठौड़ ने कहा कि पाकिस्तान से धार्मिक उत्पीड़न के कारण वर्ष 1971 के बाद से आज तक अलग-अलग चरणों में 7 लाख से अधिक संख्या में पाक विस्थापित राजस्थान में अलग-अलग जिलों में निवास कर रहे हैं। इनमें से 35 हजार पाक विस्थापित वे लोग हैं जो जैसलमेर, जोधपुर व बाड़मेर इत्यादि स्थानों पर काफी समय से गैर नागरिक के तौर पर रह रहे हैं। इन्होंने नागरिकता अधिनियम 1955 की तमाम अर्हताएं भी पूरी कर ली है, लेकिन दुर्भाग्य से उन्हें नागरिकता हासिल नहीं हुई है।

"हम पाकिस्तान से परेशान हो कर यहाँ आए थे"

इस पूरी कार्रवाई पर पाक विस्थापितों का कहना है कि हम यहां पाकिस्तान से परेशान होकर आए थे। हमने सोचा था कि हमें यहाँ अपनों का प्यार मिलेगा। लेकिन यहां आने के बाद परेशानी के सिवा कुछ नहीं मिला। विस्थापितों का यह भी कहना है कि उनके मकानों के पास ही सरकारी भूमि पर बने अन्य मकानों पर कार्रवाई नहीं की गई।

एक ओर तो केन्द्र सरकार ने सीएए कानून लाकर पाकिस्तान से आने वाले विस्थापितों के लिए नागरिकता देने के नियम सरल बना दिए हैं, वहीं राज्य सरकार उनके प्रति सहानुभूति दिखाना तो दूर, उनके कच्चे-पक्के मकानों को बुलडोजर से धराशायी कर उन्हें सड़क पर लाने पर तुली है। प्रशासन के इस प्रयास की कई हिंदू संगठनों ने घोर निंदा की है।

प्रशासन बैकफुट पर

मामला तूल पकड़ने पर जैसलमेर कलेक्टर टीना डाबी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। प्रेस कॉन्फ्रेंस से पहले टीना ने पाक विस्थापितों के प्रतिनिधि मंडल से मुलाकात की। प्रशासन पूरी तरह से बैकफुट पर था। कलेक्टर टीना डाबी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि इस मामले में सूचना का अभाव रहा, आपसी समझ की भी कमी रही। विस्थापितों की मांगे पूरी की जाएंगी। जिन्हें नागरिकता मिल चुकी है, उन्हें जगह देने पर काम कर रहे हैं। परंतु जिन्हें अभी नागरिकता नहीं मिली है, उनके लिए भी जगह चिह्नित करने का प्रयास होगा। फिलहाल रैन बसेरों में रहने की व्यवस्था की गई है। ●

नागरिकता आवेदन के लिए कैंप

सीमाजन कल्याण समिति द्वारा पाक विस्थापित बंधुओं को नागरिकता दिलाने हेतु ऑनलॉइन नि:शुल्क आवेदन फॉर्म भरने के लिए कैंप बीती 17 मई को लगाया गया। इस कार्य में अमेरिका रह रहे पंकज जी का सहयोग मिला है।

शीर्ष न्यायालय ने सुधारी अपनी गलती, कहा- सांस्कृतिक विरासत क्या है, इसे तय करने का अधिकार न्यायालय को नहीं

पिछले वर्षों में कभी व्यक्तिगत अधिकार के नाम पर तो कभी पशु क्रूरता या अन्य किसी आधार पर देश के उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय भारत की सदियों पुरानी सांस्कृतिक विरासत और परम्पराओं में हस्तक्षेप करते हुए उनमें बदलाव करते रहे हैं। अब शीर्ष अदालत ने बीती 18 मई को सही निर्णय दिया है कि ऐसे मामलों में निर्णय करने का अधिकार जन प्रतिनिधियों को (संसद-विधानसभा के माध्यम से) है।

सर्वोच्च न्यायालय के सामने मामला था यह तमिलनाडु की सदियों पुरानी परम्परा 'जल्लीकट्टू' के संबंध में निर्णय लेने का। तमिलनाडु का एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम है जिसमें लोगों की भीड़ में एक जंगली सांड को छोड़ते हैं। इस खेल में भाग लेने वाले लोग भागते सांड के ऊपर चढ़कर सवारी करने और उसे नियंत्रण में लाने का प्रयास करते हैं। यह खेल जनवरी के महीने में तमिल फसल से जुड़े उत्सव पोंगल के दौरान आयोजित होता है।

2014 में 'भारतीय पशु कल्याण बोर्ड बनाम ए.नागराज' के वाद में सर्वोच्च न्यायालय ने जल्लीकट्टू को सांडों के प्रति क्रूरता मानकर प्रतिबंधित कर दिया था। इस निर्णय से तमिलनाडु के लोगों की भावनाएं आहत हुई। कारण कि, यह खेल न केवल वहां बहुत लोकप्रिय है वरन् इस खेल के लिए तमिल लोग सांडों की देखभाल और नस्ल सुधारने में भी लगे रहते हैं।

तमिलनाडु सरकार का कहना है कि यह खेल देशी बैल की नस्लों के प्रजनन की संस्कृति को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उनके अस्तित्व को सुनिश्चित करता है।

2016 में केन्द्र सरकार ने तमिल लोगों की भावनाओं का आदर करते हुए अधिसूचना जारी कर कुछ प्रतिबंधों के साथ जल्लीकट्टू खेल को जारी रखने की अनुमति दे दी थी। 2017 में राज्य सरकार ने भी एक संशोधन कानून के द्वारा इस खेल की अनुमति कुछ आसान शर्तों के साथ दी।

जल्लीकट्टू खेल को अनुमति देने वाली केन्द्र की अधिसूचना और राज्य सरकार के संशोधन कानून को चुनौती दी गई थी। बीती 18 मई, 2023 को सर्वोच्च न्यायालय की 5 जजों वाली संविधान पीठ ने जल्लीकट्टू, कंबाला और बैलगाड़ी दौड़ की प्रथाओं को अनुमति देने वाले कानूनों को यथावत रखते हुए अपने 2014 के निर्णय से असहमति प्रकट की।

न्यायालय ने कहा कि देश की सांस्कृतिक विरासत क्या है, इसके संबंध में निर्णय लेने का अधिकार विधायिका को है, न कि न्यायपालिका को। विधायिका ने इसे विरासत का भाग माना है तो ठीक ही है। न्यायालय को ऐसे मामलों में विचार नहीं करना चाहिए।

शीर्ष न्यायालय के इस निर्णय का स्वागत किया जाना चाहिए। केरल के सबरीमाला मंदिर जैसे मामलों में न्यायालय के हस्तक्षेप से लोगों की भावनाएं आहत होती रही हैं। ●

जब खुले आम पशुओं को काटा जाता है तो जीव-दया का सिद्धान्त कहां चला जाता है?

तमिलनाडु स्थित केन्द्रीय विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक जल्लीकट्टू विवाद पर कहते हैं कि विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में खुलेआम गोमांस (बीफ) परोसा जा रहा है। गोमांस बिक्री के लिए विज्ञापन दिए जा रहे हैं। यदि सरकार या न्यायपालिका को पशुओं को होने वाली हानि और उसके कल्याण की इतनी ही चिंता है तो हर तरह के मांस की बिक्री एवं सेवन पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। जब एक ओर अल्पसंख्यकों के त्योहार विशेष पर खुलेआम पशुओं को काटा जाता है तब जीव दया कहां चली जाती है? यदि बकरा काटने का आधार मजहब है तो हिन्दुओं की परंपराओं का क्या कोई धार्मिक आधार नहीं है? इस पंथ निरपेक्ष देश में विशाल होती अल्पसंख्यक आबादी की परंपराएं सही और हिन्दुओं की परंपराएं गलत- यह कैसे हो सकता है? कभी सबरीमाला में हस्तक्षेप और कभी जल्लीकट्टू में। न्यायालयों का यह हिंदू विरोधी रवैया जनमानस को आंदोलित करने लगा है। इस बार शीर्ष न्यायालय ने सही निर्णय दिया है।

पखवाड़े का कथन

" मोदी बोस हैं। मैंने इस मंच (सिडनी के ओलिम्पिक पार्क) पर इससे पहले ब्रूस स्प्रिंगस्टोन को देखा था, लेकिन उन्हें ऐसा स्वागत नहीं मिला जो मोदी को मिला। "

- एंथोनी अल्बानीज,
प्रधानमंत्री, ऑस्ट्रेलिया
(23 मई, 2023)

भारत : सनातन राष्ट्र - सनातन धर्म

■ हिमांशु राय नागौरी
- पूर्व जिला न्यायाधीश, उदयपुर

सनातन का अर्थ पुरातन से नहीं है। सनातन का तात्पर्य immortal (अमर, अविनाशी) से है। सनातन का अर्थ eternal (शाश्वत) से है। सनातन का अर्थ time tested से है यानि जो प्रत्येक समय की कसौटी पर खरा उतरा हो तथा जो समय के साथ बदलता नहीं हो। सनातन immemorial है अर्थात् जिसका आरंभ या स्रोत ज्ञात नहीं किया जा सके। जो कालातीत है लेकिन फिर भी नूतन बना रहे। जिसको कोई चुनौती नहीं दी जा सके, जैसे सत्य बोलना चाहिए, यह व्यवहार समय के साथ नहीं बदलता है। चोरी नहीं करनी चाहिए, यह व्यवहार भी समय के साथ नहीं बदलता है। क्या कोई कह सकता है कि सत्य नहीं बोलना चाहिए या चोरी करनी चाहिए?

हिंदू धर्म सनातन है सेक्युलर है

हमारा देश भारत सनातन राष्ट्र है। हमारा हिन्दू धर्म सनातन है। इनका न तो आदि है न अन्त। हिन्दू धर्म सदैव समय की कसौटी पर खरा उतरा है। यह अनादि काल से ऐसा ही है। मानव सभ्यता विकास के समानांतर यह धर्म विकसित हुआ है। यह प्रकृति पर आधारित है। यह मानव की प्रकृति के अनुरूप है। यह ईश्वरीय धर्म है। यह मानवीय धर्म है। दूसरे धर्मो को धर्म कहना सुसंगत नहीं है। दूसरे धर्मो को पंथ कहना पर्याप्त है। इनका आरम्भ, इनका स्रोत ज्ञात है। मुस्लिम पंथ पैगंबर मोहम्मद से प्रारंभ हुआ था और ईसाई पंथ ईसा मसीह से प्रारंभ हुआ था। ये पंथ या धर्म मानव निर्मित हैं। लेकिन हिन्दू धर्म अनादि काल से है। हिन्दू धर्म अपने आप में सेक्युलर (पंथ निरपेक्ष) है। हमें उसे pseudo secular (छद्म पंथनिरपेक्ष) बनाने की आवश्यकता नहीं है।

अपसंस्कृति का हो रहा है प्रचार

हिन्दू धर्म मानवीय मूल्यों पर आधारित है। इसकी सनातन परम्पराएँ है। लेकिन अब हमारे देश में कुछ अपसंस्कृति का आयात किया जा रहा है, जैसे लिव इन रिलेशनशिप। आजकल सोची समझी रणनीति के अन्तर्गत इसकी वकालत की जा रही है।

यह षड्यंत्र अपने देश की सनातन परम्परा और परिवार संस्था को छिन्न-भिन्न करने के लिए किया जा रहा है। इसके अलावा आजकल अपने देश में एक शब्द LGBTQ का बहुत ज्यादा प्रयोग किया जा रहा है। LGBTQ यानि Lesbian, Gay, Bisexual, Transgender & Queer community. इनके अधिकारों को लेकर आन्दोलन हो रहे हैं। ऐसे आन्दोलन उनके सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक अधिकारों पर ज्यादा फोकस नहीं होकर उनके यौन अधिकारों पर ज्यादा केन्द्रित हैं।

समलैंगिक विवाह का वाद निरस्त करने योग्य

माननीय सुप्रीम कोर्ट ने अपने यहां लम्बित सैकड़ों लोकहित के मामलों को छोड़कर समलैंगिक विवाह के विषय को अत्यंत महत्वपूर्ण मानकर प्राथमिकता दी है। यह माननीय सुप्रीम कोर्ट का विवेक है, **लेकिन आम लोगों में यह चर्चा अवश्य है कि माननीय सुप्रीम कोर्ट सामान्य विवेक की साधारण सी बात को क्यों नहीं समझ पा रहा है कि विवाह केवल स्त्री और पुरुष में ही हो सकता है।**

विचारवान नागरिकों का यह मानना है कि माननीय सुप्रीम कोर्ट को ऐसी याचिका सरसरी तौर पर ही प्रथम दृष्टया सुनवाई योग्य नहीं मानकर निरस्त कर देनी चाहिए थी।

होनी चाहिए थी कैमरा ट्रायल

यदि माननीय सुप्रीम कोर्ट को समलैंगिक कामुक मैथुन से सम्बन्धित विषय को प्राथमिकता देकर इसे सुनना ही था तो इसकी कैमरा ट्रायल (बन्द कमरे में सुनवाई) करनी चाहिए थी और मीडिया को इससे दूर रखना चाहिए था। **आप अनुमान नहीं लगा सकते हैं कि इस तरह की सुनवाई और सड़क छाप प्रचार से अपरिपक्व बच्चों तथा युवा पीढ़ी पर इसका कितना विपरीत प्रभाव पड़ा होगा।**

समलैंगिक विवाह के दुष्परिणाम

विवाह में एक पुरुष और एक स्त्री होते हैं, जिन्हें पति-पत्नी कहते हैं । ऐसी स्थिति में समलैंगिक जोड़े में पति किसे कहेंगे और पत्नी किसे कहेंगे, या तो दोनों पति होंगे या दोनों पत्नी होंगी। भारतीय संस्कृति में विवाह का मुख्य उद्देश्य यौन संबंध अथवा कामुकता नहीं रहा है। हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार (Religious sacrament) है। भारतीय संस्कृति में विवाह का मुख्य उद्देश्य संतति को उत्पन्न करना और परिवार को बनाना रहा है, जिससे सृष्टि निरन्तर चलती रहे। समलैंगिक जोड़ा सन्तान पैदा नहीं कर सकता। ऐसे जोड़ों का मुख्य उद्देश्य फूहड़ कामुकता के प्रदर्शन की वैधानिकता प्राप्त करना ही है। इसके अलावा समलैंगिक जोड़े द्वारा बच्चे को गोद लिये जाने की स्थिति में उस बच्चे की परवरिश, उसके भविष्य, उसकी मानसिकता और उसके विकास के बारे में किसी ने सोचा है? वह क्या बतायेगा कि उसके माता अथवा पिता नहीं है बल्कि उसके दो पिता अथवा दो माता है। वह बिना माता या बिना पिता की संतान है । ऐसी अपसंस्कृति को अपने देश में पनपने नहीं दिया जा सकता है। यह विकृत मानसिकता का द्योतक है।

भारतीय संस्कृति के विरुद्ध षड्यंत्र

आजकल सोची समझी रणनीति के अन्तर्गत अपने देश की सनातन परम्पराओं और भारतीय संस्कृति को दूषित करने का षड्यंत्र रचा जा रहा है। अब समय आ गया है कि हमें जागरूक होना होगा। इस मानसिकता के साथ आगे बढ़ना होगा कि आज नहीं तो कभी नहीं । हमारे प्रत्येक कार्य कलाप में धर्म को प्राथमिकता देनी होगी। हमारी संस्कृति में कोई समझौता करने की आवश्यकता नहीं है। हमें कठोरता एवं जागरूकता से प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सनातन परम्पराओं को बनाये रखने और पुनर्स्थापित करने के लिए संघर्ष करना होगा। ●

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर विशेष

दीर्घायु स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है योग

■ **मेघ सिंह,** *प्रदेश संयोजक राज. क्रीड़ा परिषद्*

दिसम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली, जिसकी पहल भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 27 सितम्बर, 2014 को महासभा में की थी। भारतीय संस्कृति के अनुसार यह दिन वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है। योग का निरंतर अभ्यास व्यक्ति को स्वस्थ और दीर्घायु जीवन प्रदान करता है।

वृक्षासन - वृक्ष अर्थात् पेड़, इस आसन के अभ्यास की अंतिम स्थिति एक पेड़ के आकार की बनती है, इसलिए यह नाम दिया गया है।

अभ्यास स्थिति : दोनों पैरों को एक-दूसरे से 2 इंच की दूरी रखकर खड़े हो जाएं। दाएं पैर को मोड़कर उसके पंजे को बाएं पैर की अंदरूनी जांघ पर रखें, एड़ी मूलाधार से मिलाएं। दोनों हाथ ऊपर की ओर ले जाकर हथेलियां मिलाएं। 10 से 30 सेकण्ड तक इस स्थिति में रहे, श्वांस सामान्य रखें। हाथों व दाएं पैर को पूर्व स्थिति में लाएं। शरीर को शिथिल करके यही क्रिया बाएं पैर से दोहराएं।

लाभ : तंत्रिका से संबंधित स्नायु को मजबूत बनाकर समन्वय को बेहतर बनाता है। लिगामेंट्स को सुदृढ़ करके शरीर को गठीला बनाता है तथा संतुलन बनता है।

शलभासन- शलभ अर्थात् टिड्डी की स्थिति बनती है, इसलिए यह नाम दिया गया है।

अभ्यास स्थिति : सर्वप्रथम पेट के बल लेट जाएं। ठुड्डी को पृथ्वी पर टिकाकर दोनों हाथों को शरीर के बगल में रख लें, हथेलियां ऊपर की ओर रहे। घुटनों को मोड़े बिना पैरों को जमीन से जितना हो सके ऊपर उठाएं। हाथों को इस तरह रखे कि शरीर जमीन से आसानी से ऊपर उठ सके। इस स्थिति में 10-20 सेकण्ड तक रहे, श्वांस-प्रश्वांस सामान्य रहे। पैरों को जमीन पर वापस ले आएं। कुछ समय लेटे रहे।

लाभ : साइटिका एवं पीठ के निचले हिस्से के दर्द को कम करता है। नितंबों की मांसपेशियों तथा वृक्क (गुर्दों) को सुगठित करता है। जांघों एवं नितंबों पर एकत्रित अतिरिक्त वसा को कम करके मोटापा नियंत्रित करता है। उदर के अंगों को लाभ पहुँचाता है तथा पाचन में सहायता करता है।

वक्रासन (मरीच्यासन)

वक्र अर्थात् घुमाव या ऐंठन, इस आसन में मेरूदंड को घुमाया जाता है, इसलिए यह नाम दिया गया है।

अभ्यास स्थिति : दोनों पैरों को फैलाकर बैठ जाएं। दाएं पैर को मोड़ते हुए उसके पंजे को बाएं घुटने के बगल में रखे। शरीर को दाईं तरफ घुमाते हुए बाएं हाथ को दाएं घुटने के पास लाएं और दाएं पैर के अंगूठे को पकड़ लें अथवा हथेली को उसके पास रखें। दाएं हाथ को पीछे ले जाएं और हथेली को जमीन पर रखे जब तक पीठ शरीर से लंबवत न हो जाएं। इस स्थिति में 10-30 सेकण्ड तक रहे। सामान्य ढंग से श्वांस-प्रश्वांस लेते रहें, शरीर शिथिल रखें। अपने हाथ पूर्व स्थिति में ले आएं। इस अभ्यास क्रम को दूसरी तरफ से भी दोहराएं।

लाभ : मेरुदंड की अस्थि में लचीलापन बढ़ाता हैं। कब्ज, अग्निमांद्य को दूर करता है। पैंक्रियाज की शक्ति बढ़ाकर मधुमेह के प्रबंधन में सहायता प्रदान करता है।

सावधानियाँ - उक्त आसनों को अधिक पीठदर्द व डिस्क डिस्आर्डर, उदर की सर्जरी, मासिक धर्म के दिनों में, हर्निया, पेप्टिक अल्सर आदि के रोगियों को नहीं करने चाहिए।

पुण्यतिथि : 18 जून

साहस का पर्याय लक्ष्मीबाई

आज भी जब किसी युवती या महिला को साहसी कार्य करते देखा जाता है तो उसे 'झांसी की रानी' की उपमा मिल जाती है। युग-युगांतर तक साहस की पर्याय मानी जाने वाली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा लेकर बता दिया था कि एक अकेली महिला भी अपने राज्य की रक्षा कर सकती है।

22 वर्षीय लक्ष्मीबाई के अप्रतिम शौर्य से चकित अंग्रेजों ने भी रानी लक्ष्मीबाई के साहस की प्रशंसा की। अश्वारोहण और शस्त्र संधान में निपुण लक्ष्मीबाई ने झांसी किले के अंदर ही महिला सेना खड़ी कर ली थी, जिसका संचालन वह स्वयं मर्दानी पोशाक पहनकर करती थीं।

जब ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी की मान्यता न देते हुए झांसी पर कब्जा करने की नियत से कूच किया,तभी लक्ष्मीबाई ने घोषणा कर दी कि ''मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।

लगातार आठ दिन तक तोपें किले से आग उगलती रहीं। अंग्रेज सेनापति ह्यूरोज लक्ष्मीबाई की किलेबंदी देखकर दंग रह गया। रानी रणचंडी का साक्षात रूप लिए पीठ पर दत्तक पुत्र दामोदर राव को बांधे भयंकर युद्ध करती रहीं। तात्या टोपे के साथ मिलकर उन्होंने ग्वालियर के किले पर सफल हमला किया और खजाना व शस्त्रागार जब्त किया। ग्वालियर के बाद अंग्रेजों से युद्ध करने के लिए वे मोरार की ओर बढ़ीं और एक सैनिक की पोशाक में युद्ध मैदान में ही बलिदान हो गईं। सच ही है ''...खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी।''

उत्तर : जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है- 1.अंगद 2.सैरन्ध्री 3.अफगानिस्तान 4.शृंगेरी 5. भूमिसूक्त 6. राय हरिहर 7. कुतुबमीनार, 8.वासुदेव बलवंत फड़के 9. भरतपुर 10. ठाकुर कुशाल सिंह

गतांक से आगे....

गौ-आधारित जैविक खेती ही क्यों ? भाग-2

■ **बद्रीनारायण चौधरी**
-राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय किसान संघ

पिछले अंक में हमने देखा कि भारतीय कृषि पद्धति प्राकृतिक नियमों पर आधारित थी, प्रकृति के अनुरूप होने के कारण हानिकारक कीटों को मारने की आवश्यकता नहीं थी, प्राकृतिक संतुलन स्वयं प्रकृति की व्यवस्था से कायम रहता था। कृषि को शाकाहारी सूक्ष्म/अतिसूक्ष्म जीव नुकसान पहुँचाते हैं, तो उनको खाने वाले मांसाहारी जीव एवं पक्षी भी साथ ही रहकर संतुलन स्थापित कर लिया करते थे। कोई पदार्थ अवशिष्ट रूप में अनुपयोगी होकर पर्यावरण या जीवन के स्वास्थ्य के लिए नुकसान देह नहीं होता था। सभी अवशिष्ट कृषि के लिए या दूसरे जीवाणुओं के लिए उपयोगी बन जाते हैं और इसप्रकार एक मृत जीव दूसरे का आहार या मिट्टी की उपजाऊ क्षमता बढ़ाने के लिए प्रयुक्त होता था। इस तरह नैसर्गिक-प्राकृतिक स्वास्थ्य चक्र चलने के कारण प्रदूषण नामक रोग कारण भी नियंत्रित रहता था। अत: प्रकृति में सब कुछ पहले से मौजूद है, बाह्य संसाधनों की आवश्यकता नहीं रह जाती। यदि किसी चीज की जरूरत है तो वह है ज्ञान। इसी ज्ञान को हमने दो भागों में समझा- 1. विद्या और 2. अविद्या।

प्रकृति के ऋण से उऋण होना

कृषि-कर्म का पंडित भारत का किसान पशु-पक्षियों को भी उनका हिस्सा खाने दिया करता था। पंच महाभूतों के योगदान को समझकर उनकी पुनर्पूर्ति अर्थात् उनकी शुद्धि का भी पूरा ध्यान रखता था। प्रकृति के ऋण से उऋण होने का उसको ज्ञान था, जिसकी पुष्टि के लिए ऋग्वेद का महावाक्य 'कृषिमित कृषस्व!' यह इंगित करता है कि खेती करो और खेती ही करो। यही एक मार्ग है जिसके माध्यम से प्रकृति 'पंचभूतों' के ऋण से उऋण हुआ जा सकता है और कोई भी भारतीय अपने जीवन में लिए गये ऋणों का चुकारा करके ही जाना श्रेयस्कर समझता था।

विज्ञान के आविष्कारों को भी समाज हित (धर्म) को ध्यान में रखकर ही अनुमति

दी गई है, अर्थात् धर्म नियंत्रित रखकर ही अनुमति दी गई, यदि समाज हित के विपरीत भी हुए तो उन पर अंकुश लगाने के नियम भी बनाये गये। विज्ञान खण्ड-खण्ड का अध्ययन एवं अविष्कार करता गया। जबकि यहाँ समग्रता का चिंतन की प्रक्रिया अपनाई थी। इस शरीर को एक इकाई मानकर चिंतन हुआ, एक भी अंग कम नहीं। हमारी समग्रता की दृष्टि में व्यष्टि-समष्टि -परमेष्टि तक एकात्म भाव ही देखा गया, फिर चाहे वनस्पति हो, जीव-जन्तु हों, या मनुष्य हों सभी में उसी एक तत्व के दर्शन किए गये।

कृषि प्रधान देश

भारत कृषि प्रधान रहते हुए भी सोने की चिड़िया कहा गया। विश्व के व्यापार में धाक थी, लम्बे समय तक विश्व व्यापार में 32-35 प्रतिशत हिस्सा हमारा होता था। अधिकांश व्यापार कृषि एवं उसके सहायक उद्योगों द्वारा निर्मित उत्पादों का हुआ करता था। गुणवत्ता के क्षेत्र में सिरमोर थे, हस्त शिल्प एवं कारीगरी में विशिष्ट महारथ तक पहुँचे थे, इसी कारण कभी ढाका की मलमल रही हो, चाहे यहाँ का फौलाद रहा, चाहे जलपोत रहे, औषध उत्पाद, मसाले, जहरमुक्त आहार एवं स्वादिष्ट-पाचन युक्त-स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेष्ठ खाद्य एवं पेय पदार्थ रहे, उनका सेवन करने के लिए समस्त विश्व लालायित था।

गुलामी के कालखंड में किसानों पर अंकुश

कालांतर में, गुलामी के काल खण्ड में यहाँ के कारीगरों, किसानों पर अंकुश लगाये गये। अंगूठे एवं हाथ काटे गये। अंग्रेजों ने केवल वही कृषि पैदा करवाई, जिसकी उनको आवश्यकता होती थी। बिहार में तो नील की खेती करने की बाध्यता से छुटकारा पाने हेतु बहुत बड़े किसान आंदोलन की भी जरूरत पड़ी। अर्थात् गुलामी की सबसे बड़ी कीमत भारत की ग्रामीण जनता को चुकानी पड़ी। खाद्यान्न का उत्पादन घटता गया, औद्योगिक उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल के उत्पादन पर शासन का दबाव बढ़ता गया। परिणाम स्वरूप देश की जनता का पेट भरना भी कठिन हो गया। कभी अमेरिका से पीएल-480 योजना में गेहूँ आयात किया तो लाल बहादुर शास्त्री जी को देश की जनता को यह आह्वान करना पड़ा कि सप्ताह में एक दिन (सोमवार) एक ही समय भोजन करेंगे, ताकि खाद्यान्न संकट से देश को उबारा जा सके। दूसरी ओर खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए पश्चिमी कृषि तकनीक को देश में लाया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद योरोपीय देशों के पास आयुद्ध उत्पादन की कच्ची सामग्री यथा-यूरिया, फास्फोरस, पोटाश जैसी विस्फोटक सामग्री शेष बची हुई रह गई, उसका खेती में प्रयोग चमत्कारिक सिद्ध हुआ और एक कृषि वैज्ञानिक डॉ. नारमन बॉरलॉग ने रासायनिक खेती का आविष्कार कर सभी को चकित कर दिया। 1960 के दशक में यह तकनीक भारत में लाने के लिए डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन खड़े हुए और 'हरित क्रांति' के रूप में भारतीय कृषि के क्षेत्र में उतारा गया। बहुत ताकत लगानी पड़ी। किसान इसे अपनाने को तैयार नहीं थे, कहीं चोरी-छिपे खेत के कुछ हिस्सों में यूरिया बिखेरा गया, कहीं मुफ्त में यूरिया बांटा गया। संपन्न एवं बड़े किसानों ने समझकर पहले अपनाया, फिर आम किसान भी अपनाने लगा। एक बार तो खाद्य संकट से उबारने में इस तकनीक ने मदद की परन्तु इसके दूरगामी परिणामों पर कोई शोधकार्य नहीं हुआ था। इसलिए 20-30 वर्षों में ही दुष्परिणाम सामने आने लगे। दुर्भाग्य से उसी कालखण्ड में कृषि विज्ञान विषय का विकास भी हरित क्रांति केन्द्रित ही हुआ, जिसका आधार रसायन आधारित उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवारनाशी आदि बने। और देखते-देखते पृथ्वी की समस्त खेती एवं कृषि शिक्षा, शोध कार्य, और बड़े-बड़े संस्थान खड़े हो गये। भारतीय कृषि शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। क्रमश: .....

उदयपुर

तपती धूप में हजारों किसान पहुँचे जयपुर

34 सूत्रीय मांगों को पूरा कराने के लिए सभा, धरना और ज्ञापन

उपज के आधार पर लाभकारी मूल्य देने, हर खेत को पानी, 8 घंटे सस्ती व निर्बाध बिजली, सस्ते व टैक्स मुक्त कृषि उपकरण देने सहित अपनी 34 मांगों को पूरा कराने के लिए बीती 16 मई की तपती धूप और लू के थपेड़ों के बीच प्रदेश के हजारों किसान जयपुर पहुँचे, उन्होंने पहले विद्याधर नगर स्टेडियम में डेरा डाला और निकल पड़े सचिवालय का घेराव करने।

पुलिस ने डबल बैरिकेडिंग कर उन्हें रास्ते में रोका तो वहीं बैठ गए धरने पर। तब सरकार ने वार्ता के लिए प्रतिनिधि मंडल को सचिवालय बुलाकर किसानों की मांगों पर चर्चा की।

किसान कच्चा माल तैयार करता है तभी चलते हैं कारखाने

किसानों की सभा में श्री मणिलाल लबाणा ने कहा कि किसान रॉ (कच्चा) मटेरियल तैयार करता है तब कारखाने चलते हैं। वह अपनी मेहनत से देश ही नहीं विश्व का पेट भरता है परंतु सरकार का सरोकार किसानों से नहीं है। सरकार की नीयत में खोट है। आज किसान दगा और ठगी के शिकार हो रहे हैं। किसान को उपज का मूल्य नहीं मिल रहा और उपभोक्ता को भी महंगा प्राप्त हो रहा है। सरकार मुगालते में न रहे कि अब उसका किसानों पर कोई जादू चलने वाला है। उन्होंने कहा कि सामूहिक शक्ति से ही किसानों की समस्याओं का समाधान हो सकता है।

श्रीमती मंजू दीक्षित ने कहा कि किसानों को कमजोर मत समझो। किसानों को बर्बाद करने की साजिशें हो रही हैं। इसलिए देश का पेट भरने वाला किसान खुद भूखा सोने पर मजबूर है।

किसानों के आंदोलन में गांव-गांव से लोग नाचते गाते और ढोल बजाते हुए सभा स्थल पर पहुंचे जिन्होंने हाथों में विभिन्न नारे लिखी तख्तियां ले रखी थी तो दूसरे हाथ में भारतीय किसान संघ की पताका मौजूद थी। किसानों के सिर पर पूरे राजस्थान का प्रतिनिधित्व करती लाल, पीली, चुनरी, मोठड़ा और मारवाड़ी समेत विभिन्न प्रकार की पगड़ी सजी हुई थी।

लघु उद्योग भारती की किसान व लघु उद्यमी गोष्ठी

किसान अपनी फसल का मालिक बनने की राह पर

भारतीय किसान संघ के जोधपुर प्रांत के संगठन मंत्री श्री हेमराज ने कहा है कि किसान अब अपनी फसल का मालिक बनने की राह पर है। किसान की नई पीढ़ी ने अपनी फसल को प्रसंस्करण विपणन करने की दिशा में काम करना शुरू कर दिया है। इससे न केवल किसान को, बल्कि आम उपभोक्ताओं को भी लाभ होगा। एक तो शुद्धता व गुणवत्ता को लेकर संदेह खत्म होगा, दूसरा स्वास्थ्य को लेकर भी चिंताएं कम होंगी। श्री हेमराज 15 मई को उदयपुर में भारतीय किसान संघ के कार्यकर्ताओं, किसान परिवारों एवं युवा लघु उद्यमियों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि अब दुनिया भारत की पारम्परिक खेती के महत्व और उसमें छिपे स्वास्थ्यकारी गुणों को समझ रही है और अपना रही है। ऐसे में भारत के किसान के पास जैविक खेती का एक बहुत बड़ा

बाजार है। जैविक खेती की प्रक्रिया अपनाने वाले किसानों का लाभांश तुलनात्मक रूप से बढ़ा है और उन्हें देख अन्य काश्तकार भी इस दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। रासायनिक खेती के मुकाबले जैविक खेती में भूमि की उर्वरता न केवल संरक्षित रहती है, बल्कि संवर्धित भी होती है।

उन्होंने बताया कि सिर्फ अनाज के क्षेत्र में ही जैविक खेती सीमित नहीं रही है, अब दलहन व तिलहन में भी जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से इस तरफ रुझान बढ़ा है। इतना ही नहीं, तेल-गुड़ आदि को तैयार करने की विधि में भी पुन: परम्परागत तरीकों का उपयोग बढ़ रहा है। इससे मशीनी उपयोग के दौरान कुछ पौष्टिक अवयवों के नष्ट होने की आशंका से भी बचा जा सकेगा।

डेयरी कॉलेज के डीन डॉ. लोकेश गुप्ता ने कहा कि कोई भी कृषि व पशुपालन सम्बन्धी उद्योग लगाना चाहता हो तो वह महाविद्यालय में सम्पर्क कर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है। उन्होंने युवा उद्यमी महेंद्र सिंह का उदाहरण देते हुए कहा कि महाविद्यालय में प्रशिक्षण लेकर उन्होंने तकनीकी दक्षता प्राप्त की और स्टार्टअप शुरू किया, जिसमें केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के मार्फत बैंक से ऋण सहयोग भी प्राप्त हुआ।

सारा समाज मेरा है, यह व्यवहार में प्रकट हो - निम्बाराम

राजस्थान में 11 स्थानों पर संघ के शिक्षा वर्ग आरंभ

संघ द्वारा गर्मियों में प्रतिवर्ष लगाए जाने वाले प्रशिक्षण वर्गों की शृंखला में इस वर्ष राजस्थान क्षेत्र में 11 शिक्षा वर्ग लगाए गए हैं। हिंडौन सिटी में आयोजित द्वितीय वर्ष (सामान्य) शिक्षा वर्ग का शुभारंभ 21 मई को हुआ।

क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने वर्ग के उद्घाटन सत्र में कहा कि संघ संपूर्ण हिंदू समाज का संगठन है। सारा समाज एक है, ऐसा भाव जागृत करने का कार्य हमें करना है। केवल विचार में ही नहीं व्यवहार में भी यह प्रकट होना चाहिए। शाखा कार्य यानि देश के लिए अच्छे व्यक्ति तैयार करना जिसे हम व्यक्ति निर्माण कहते हैं। अब हमें भारत विमर्श स्थापित करना है। हमें 'हम','मैं' और 'मेरा' से ऊपर उठकर प्रत्येक गांव में शाखा और मिलन शुरू करना है।

शिक्षा वर्ग एक साधना

जैसलमेर में लगे शिक्षा वर्ग के उद्घाटन पर श्री निरंजन भारती ने कहा कि ये मात्र प्रशिक्षण वर्ग नहीं अपितु साधना है। सह प्रांत कार्यवाह ने कहा कि स्वयंसेवक दीप में लगी बाती के समान है। उसके व्यवहार में संघ का दर्शन होना चाहिए। वर्तमान काल संघ कार्य के लिए अनुकूल बना है।

भीलवाड़ा के शिक्षा वर्ग में प्रांत प्रचारक श्री विजयानंद ने शिक्षार्थियों से पर्यावरण संरक्षण, सेवा संकल्प, स्वावलंबन की चर्चा करते हुए अनुशासित व जिज्ञासु बनने की प्रेरणा दी।

हिंडौन शिक्षा वर्ग के सर्वाधिकारी श्री प्यारेलाल मीणा ने बताया कि इस वर्ग में राजस्थान के 253 शिक्षार्थी हैं जिन्हें प्रशिक्षण देने के लिए 31 कार्यकर्ता शिक्षक के रूप में कार्य करेंगे। अल्पाहार, भोजन, जल, सुरक्षा आदि व्यवस्थाओं को संभालने के लिए भी 20 स्वयंसेवक आए हैं। सभी शिक्षार्थी अपने स्वयं के खर्च से वर्ग में पहुँचे हैं तथा वर्ग का निर्धारित शुल्क सभी ने जमा कराया है?

समाज को संगठित करने तथा शाखा कार्य करने की क्षमता अर्जित करने के लिए संघ शिक्षा वर्ग में 20 दिनों के लिए कठोर शारीरिक मानसिक व बौद्धिक प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रात: 4 बजे से लेकर रात्रि 10:30 बजे तक निर्धारित दिनचर्या का पालन करते हुए स्वयंसेवक समय पालन, अनुशासन व समाज के प्रति अपनत्व भाव को आचरण में उतारता है। अपने इतिहास की सही दृष्टि जानना व वर्तमान समय की समस्याओं पर चर्चा, चिंतन व उद्बोधन भी वर्ग के आवश्यक भाग होते हैं। वहां कोई किसी की जाति नहीं पूछता, सब प्रेम, आनन्द तथा उत्साह से वर्ग के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

जोधपुर प्रांत का प्रथम वर्ष का शिक्षावर्ग जैसलमेर में 21 मई से ही शुरू हुआ। इसमें 94 शिक्षार्थी तथा 40 शिक्षक-प्रबंधक सहभागी हो रहे हैं। इनमें राजस्थान के 12 प्रशासनिक जिलों से आए युवा भाग ले रहे हैं।

संघ के शिक्षा वर्ग हिंडौन के अलावा उदयपुर (द्वितीय वर्ष-विशेष) तथा प्रथम वर्ष (सामान्य) के राजसमंद, केकड़ी, भीलवाड़ा, निवाई, जयपुर (विशेष वर्ग), सीकर, जैसलमेर, तिंवरी, सिरोही (विशेष वर्ग) में लगाए जा रहे हैं।

पर्यावरण हितैषी वातावरण

हिंडौन वर्ग कार्यवाह श्री गेंदालाल सैनी ने बताया कि वर्ग में जल संरक्षण एवं वृक्ष संरक्षण से शिक्षार्थियों को जोड़ा गया है। दैनिक जीवन में जल के सदुपयोग की तकनीक का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पहले दिन कम पानी का उपयोग कर नहाने का वीडियो दिखाया गया। पानी बचाने के लिए शिक्षार्थी मिट्टी या राख से स्वयं बर्तन मांज रहे हैं। वहीं वृक्ष संरक्षण एवं वृक्षारोपण के लिए प्रेरित किया जा रहा है। प्लास्टिक मुक्त एवं स्वच्छ परिसर के लिए प्लास्टिक की बोतलों एवं कचरे से ईको फ्रेंडली ईंटें बनाई जा रही हैं। सभी शिक्षार्थियों ने 20 दिन तक मोबाइल का उपयोग नहीं करने का संकल्प लिया है।

बीजारोपण से पौधारोपण

उदयपुर के शिक्षा वर्ग में सभी 219 शिक्षार्थियों द्वारा बीजारोपण से पौधारोपण का प्रायोगिक किया। सभी ने मिट्टी में बीज रोपे। इन बीजों से निकले पौधों को वर्ग से लौटते समय शिक्षार्थी अपने साथ ले जाकर अपने क्षेत्र में पौधारोपण करेंगे।

ऑनलाइन मांगे आवेदन

शिक्षा वर्गों में प्रशिक्षण लेने के लिए संघ ने युवा कार्यकर्ताओं से ऑनलाइन भी आवेदन मांगे थे।

संघ शिक्षा वर्ग के लिए प्रयुक्त हुआ गोबर से बना 'प्राकृतिक पेंट'

भीलवाड़ा में संघ शिक्षा वर्ग के निर्धारित स्थान (विद्यालय) का रंग-रोगन खादी इण्डिया द्वारा निर्मित 'प्राकृतिक पेंट (Prakritik Paint) से किया गया। बताया गया कि इस पेंट का उपयोग करने से खर्चा आधा ही आया तथा एरिया भी ज्यादा कवर हुआ। न आंखें जली और गंध भी अच्छी लगी बताई गई। पाठकों को स्मरण होगा कि केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने वर्ष 2021 की 21 जनवरी को खादी प्राकृतिक पेंट लॉन्च किया था। इस पेंट का मुख्य घटक गाय का गोबर है। बताया जाता है कि यह न केवल पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि यह पेंट जीवाणुरोधी और गैर-विषैला भी है। अन्य पेंटों से यह सस्ता तो है ही गंधहीन भी है।

जोधपुर

राष्ट्र सेविका समिति का शिक्षा वर्ग

बेटियां सीख रही हैं आत्मरक्षा के साथ देश-समाज व धर्म की बातें

जोधपुर के श्रुतम परिसर में राजस्थान की 148 बेटियां आत्मरक्षा के गुर के साथ ही नेतृत्व क्षमता व बौद्धिक स्तर बढ़ाने तथा मानसिक-शारीरिक रूप से बलिष्ठ बनने का प्रशिक्षण ले रही हैं। इनके साथ ही पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त 37 बालिकाएं इनके प्रबोधन के लिए हैं। राष्ट्र सेविका समिति के इस 15 दिवसीय शिविर में शिक्षार्थी बेटियों को प्रात: 4 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक एक कठिन दिनचर्या का पालन करना होता है।

जयपुर

बेरोजगारी दूर करने के लिए स्वरोजगार ही समाधान

स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सह संगठक श्री सतीश कुमार ने कहा कि हमें ना पूंजीवाद चाहिए और ना साम्यवाद, हमें चाहिए राष्ट्रहित में कार्य करने वाली शक्ति। सतीश कुमार बीती 6 मई को जयपुर में स्वावलंबी भारत अभियान की कार्यशाला को मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि एक दौर था, जब चीन में बारिश होती थी तो साम्यवादी भारत में छाता तान लेते थे, लेकिन आज उनकी स्थिति पूरी तरह बदल गई है। हमें इस भारत को स्वावलंबी बनाकर युवाओं को स्वरोजगार के लिए तैयार करना है। उन्होंने कहा कि लोगों को पढ़ाई-लिखाई के बाद नौकरी की तलाश होती है। सरकारी नौकरी की तलाश करने की बजाय, हमें उन्हें रोजगार देने वाला बनाना चाहिए। बेरोजगारी दूर करने के लिए स्वरोजगार ही समाधान है। उन्होंने कहा कि साल 2030 में भारत की अर्थव्यवस्था 10 ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी। स्वामी

विवेकानंद ने कहा था कि आने वाला समय भारत का होगा।

भारत की अर्थव्यवस्था थी इंग्लैंड से सात गुणी

कार्यशाला को संबोधित करते हुए संघ के प्रांत प्रचारक श्री बाबूलाल ने कहा कि सोलहवीं सदी में भारत की जीडीपी 22 प्रतिशत थी, इंग्लैंड की जीडीपी मात्र 3 प्रतिशत थी लेकिन अंग्रेजों के आने के बाद भारत की जीडीपी 3 प्रतिशत रह गई। उन्होंने जोर देकर कहा कि हमें स्वावलंबी भारत बनाने के लिए स्वरोजगार को प्राथमिकता देनी चाहिए।

भगवान झूलेलाल का बड़ा मंदिर बना

मंदिर के पुस्तकालय में रहेंगे सभी मत-पंथों के धार्मिक ग्रंथ

जयपुर के जवाहर नगर में भगवान झूलेलाल का नया भव्य व विशाल मंदिर बनकर तैयार है। संभवत: यह राजस्थान में झूलेलाल का सबसे बड़ा मंदिर है। बताया जाता है कि यह मंदिर लोगों ने कारसेवा कर बनाया है। कोई निर्माण सामग्री लेकर आया तो किसी ने आर्थिक सहयोग दिया। मंदिर पंचायत के अध्यक्ष मनोहरलाल राजानी का कहना है कि मंदिर में विभिन्न मत-पंथों के धार्मिक ग्रंथों वाला पुस्तकालय होगा। इस लाइब्रेरी में सिंधी धार्मिक पुस्तकों के साथ ही सनातन धर्म के चारों वेद, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवतगीता, जैन और बौद्ध धर्म का साहित्य भी पढ़ने के लिए उपलब्ध रहेगा। मंदिर में बंशीपुर पहाड़ी के पत्थरों को लगाया गया है। मंदिर के बेसमेंट में पांच हजार लोगों के बैठने हेतु पर्याप्त जगह वाला सत्संग भी बनाया गया है।

मंदिर के पल्ले पर वरूणावतार भगवान झूलेलाल के साथ ही नवग्रह, गणेश जी, शिवपंचायत, माँदुर्गा, लक्ष्मीनारायण, राधा-कृष्ण, रामदरबार, शिवलिंग, खाटूश्याम जी, बालाजी, भगवान सत्यनारायण व कुछ संतों की मूर्तियां प्रतिष्ठापित की जा रही हैं। श्री गुरू ग्रंथ साहिब भी यहां होंगे।

अलवर

शाखा संगम में 40 शाखाओं के 800 स्वयंसेवक एकत्र आए

अलवर शहर के अलग-अलग स्थानों पर प्रतिदिन लगने वाली 40 शाखाओं का 'शाखा संगम' कार्यक्रम बीती 14 मई को आयोजित हुआ। कार्यालय में बाल, तरूण, व्यवसायी और संयुक्त विद्यार्थी शाखाओं के 800 स्वयंसेवको ने सहभाग किया। एक घंटे की शाखा के दौरान योग, खेल, व्यायाम, अमृत वचन, चर्चा एवं प्रार्थना जैसे अन्य कार्यक्रम हुए।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने कहा कि देश को परम वैभव पर ले जाने के लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा। अब हिंदू स्वाभिमान के साथ उठ खड़ा हुआ। हिंदू होने का गर्व लोग अनुभव करने लगे हैं। बस, यही भाव हमें साथ लेकर चलने की आवश्यकता है।

'केरल स्टोरी' फिल्म पर ममता ने लगाई थी रोक
सर्वोच्च न्यायालय ने लगाई लताड़,
मुँह की खानी पड़ी तमिलनाडु सरकार को भी,
कहा- सुरक्षा देना सरकार का काम

जहाँ सारा देश 'मतांतरण और लव-जिहाद' की कड़वी सच्चाई को उजागर करने वाली फिल्म केरल स्टोरी का स्वागत कर रहा था वहीं प.बंगाल और तमिलनाडु सरकार ने फिल्म की राह में रोड़े अटकाने का कार्य किया।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तुष्टिकरण की सारी सीमाएं तोड़ते हुए सत्य घटनाओं पर आधारित इस फिल्म 'केरल स्टोरी' के राज्य में प्रदर्शन पर रोक लगा दी। फिल्म के निर्माता-निर्देशक द्वारा प्रतिबंध के इस आदेश को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई। प.बंगाल सरकार के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने न्यायालय में कहा कि फिल्म के प्रदर्शन से राज्य में शांति भंग होने का गंभीर खतरा है जबकि वास्तविकता यह थी कि प. बंगाल में फिल्म की रिलीज 5 मई को होने के बाद 8 मई को प्रतिबंध लगाने से पूर्व तक राज्य के सभी सिनेमा घरों में दिखाई गई। सभी शो हाउसफुल थे और एक भी स्थान में किसी भी प्रकार की अशांति की घटना नहीं हुई थी।

शीर्ष न्यायालय ने कहा कि यह सरकार का कर्त्तव्य है कि वह राज्य में कानून और व्यवस्था बनाए रखे। संविधान ने राज्य का दायित्व निर्धारित किया है कि वह लोगों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करे। फिल्म के माध्यम से निर्माता-निर्देशक अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर रहे हैं। जब तक यह संविधान के अनुच्छेक 19 (2) का उल्लंघन न करे, तब तक राज्य उस पर प्रतिबंध नहीं लगा सकता।

तमिलनाडु का मामला

तमिलनाडु में इस फिल्म पर रोक लगाने का अनोखा तरीका अपनाया था। राज्य की पुलिस ने सिनेमा हॉल के मालिकों को कहा कि कोई अप्रिय घटना हो जाए तो हमें मत कहना। कोर्ट ने इस मामले में कहा कि सरकार को सिनेमा हॉल के मालिकों को पूरी सुरक्षा देनी होगी। पुलिस का काम लोगों को सुरक्षा प्रदान करना है, न कि डराना।

जैन मंदिर से चुराई मूर्तियों को बेच रहा था चोर
पुलिस ने खरीददार बन किया गिरफ्तार, बरामद की मूर्तियाँ

पिछले दिनों जैन मंदिरों सहित कई मंदिरों से प्राचीन मूर्तियां चुराए जाने के समाचार आ रहे थे। इस बीच भरतपुर के निकट हलेना थाने को जानकारी मिली कि कोई व्यक्ति प्राचीन मूर्तियों को बेचने के लिए ग्राहक ढूंढ़ रहा है। पुलिस ने अपने दो लोगों को इस कार्य में लगाया जिन्होंने ग्राहक बनकर चोर से लगातार मूर्तियों को खरीदने के लिए सौदेबाजी की और 5 करोड़ में सौदा तय हुआ। आरोपी ने नया गांव के एक ट्यूबवेल पर उन्हें बुलाया। हलेना पुलिस के एक दल ने वहां जाकर न केवल चोर को दबोच कर गिरफ्तार कर लिया, वरन दो मूर्तियों को भी अपने कब्जे में ले लिया। अष्टधातु की इन दोनों मूर्तियों को जयपुर के बजाज नगर स्थित एक जैन मंदिर से दो वर्ष पूर्व चुराया गया था।

मूर्तियों को उनके भक्त बड़ी श्रद्धा और विश्वास से मंदिरों में प्राण प्रतिष्ठा द्वारा स्थापित करते हैं। ऐसे में जो भी कोई चोरी करता है, उसे एक त्वरित न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से कठोर दण्ड दिए जाने की आवश्यकता है। यदि इसके लिए नियमों में बदल करना पड़े तो भी अवश्य करना चाहिए।

जैसलमेर

समाज सेवी ने किया भील बेटी का कन्यादान

जैसलमेर के भील समाज की बेटी निशा के पिता आत्माराम का दो वर्ष पहले असामयिक निधन हो गया। ऐसे में मां ने तीनों बहनों व दो पुत्रों को मेहनत-मजदूरी कर पाला। शादी का समय नजदीक आया तो उन्हें चिंता सताने लगी। यह बात जब समाज सेवी पवन कुमार सिंह के सामने आयी तो उन्होंने स्वयं आगे आकर न केवल बच्ची का कन्यादान किया वरन् नव-गृहस्थी का पूरा सामान देते हुए शादी का सम्पूर्ण खर्च भी वहन किया। बारात व अतिथियों का स्वागत करते हुए पवन कुमार का कहना था कि जातिगत भेदभाव का वे सदा से विरोध करते आए हैं।

टीपरी (बाली)

नाथ समाज के दूल्हे को घोड़ी पर बिठा निकाली बिंदोरी

टीपरी (बाली) गांव में कालबेलिया नाथ समाज के खेमनाथ के पुत्र दिलीप नाथ के विवाह पर केरपुरा के ठाकुर छैलसिंह चौहान व दलवीर सिंह चौहान ने प्रेरक पहल करते हुए दूल्हे को घोड़ी पर बिठाकर बिंदोरी के लिए रवाना करवाया। ऐसा करते देख कालबेलिया समाज में अभूतपूर्व खुशी का माहौल था। इस अवसर पर पूर्व सरपंच रमेश कुमार मेघवाल, पूनाराम चौधरी भी उपस्थित रहे।

जामडोली (जयपुर)

साध्वी ऋतम्भरा जी की शिष्या साध्वी समदर्शी कर रही हैं जयपुर में निःसहाय माता-बहिन-बेटियों की देखभाल व उनका प्रशिक्षण

भारत की मातृशक्ति के चिंतन और सामर्थ्य की प्रतिमूर्ति साध्वी ऋतम्भरा की शिष्या साध्वी समदर्शी गिरी जयपुर के नजदीक जामडोली में पिछले 15 वर्षों से समाज के वंचित-पिछड़े वर्गों तथा समाज से प्रताड़ित माँ-बहिनों और असहाय बच्चों की सेवा में साधनारत हैं।

निःशक्त-गरीब मां-बहिनों को संबल : साध्वी समदर्शी द्वारा स्थापित श्री शक्तिपीठ में जहां निःशक्त व गरीब महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने हेतु कई प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है वहीं अपने ही परिवारों से प्रताड़ित एवं परित्यक्ता महिलाओं एवं दिग्भ्रमित बालिकाओं को वात्सल्य साधना केन्द्र में रखकर उनकी सभी प्रकार की व्यवस्थाएं की जाती हैं।

बालिका संस्कार केन्द्र : लगभग 30 'आलिंगन संस्कार केन्द्रों' में निराश्रित बालक-बालिकाओं का लालन-पालन हो रहा है। प्रत्येक ऐसे केन्द्र में 35-40 बच्चों की व्यवस्था हो रही है।

गौशाला : 'नारायणी' नाम से एक गौशाला चलाकर गोधन की सेवा व संवर्धन का कार्य भी शक्तिपीठ में हो रहा है।

रक्षाबंधन यात्रा : साध्वी समदर्शी गिरी एक अभिनव कार्यक्रम सीमा पर बेटियों को ले जाकर फौजी भाइयों को राखी बांधने का भी प्रतिवर्ष चलाती हैं। इन सब कार्यों के लिए स्वाभाविक रूप से एक बड़ी धनराशि की आवश्यकता होती ही है। विभिन्न प्रकल्पों को सुचारू रूप से चलाने के लिए शक्तिपीठ के विस्तार की भी आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

साध्वी समदर्शी दीदी व प्रियंका परमानन्द जी द्वारा देशभर में श्री रामकथा, श्रीमद्भागवत कथा, श्री अग्रभागवत कथा, नानी बाई का मायरा एवं शिव पुराण व भक्तमाल की कथाएँ की जाती हैं, जिनके माध्यम से शक्तिपीठ के लिए सहयोग राशि एकत्रित होती रहती है। शक्तिपीठ को सहयोग देने के इच्छुक बन्धु/भगिनी अपने क्षेत्र में इन कथा-प्रवचनों का आयोजन करा सकते हैं। इच्छुक व्यक्ति 12, वात्सल्य साधना केन्द्र, जामडोली, जयपुर के पते व मोबाइल नं. 9672839893 या 7742694910 पर संपर्क कर सकते हैं।

पुण्यतिथि : 21 जून

डॉ.हेडगेवार

नागपुर के एक सामान्य परिवार में जन्में डॉ.केशवराव बलिराम हेडगेवार ने एक ऐसा तंत्र विकसित किया जिसके माध्यम से सोए हुए तथा आत्मविस्मृत हिंदुओं में न केवल देशभक्ति के भाव विकसित हुए वरन् हिन्दू संगठित भी होता दिखाई दे रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में मनुष्य निर्माण के जिस कार्य की शुरूआत उन्होंने की वह आज सभी क्षेत्रों में हिंदुत्व चिंतन के आधार पर नव-निर्माण के कार्यों में फलीभूत होता दिखाई दे रहा है। डाक्टर जी कहते थे ''परतंत्र राष्ट्र के लिए स्वतंत्रता-संग्राम के अतिरिक्त और कोई राजनीति नहीं हो सकती।'' राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की आधारशिला के निर्माण में उन्होंने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। डाक्टर जी की आकांक्षा आज लाखों कार्यकर्ताओं के अन्तःकरण में धधक रही है तथा संघ शाखाओं के बढ़ते विस्तार के साथ वह आकांक्षा उत्तरोत्तर बढ़ती हुई राष्ट्र व्यापी होने के मार्ग पर है।

पुण्यतिथि : 17 जून

जीजाबाई

हिन्दवी साम्राज्य की स्थापना के सपने को साकार करने के बाद त्यागे प्राण

शिवाजी की माता के नाम से अधिक पहचानी जाने वाली जीजाबाई स्वयं काफी बुद्धिमान एवं चतुर महिला थीं। उन्हें उनकी दूरदर्शिता एवं युद्ध नीतियों के लिए याद किया जाता है। जीजाबाई ने हिंदवी सम्राज्य की स्थापना के लिए अपने पुत्र शिवाजी को ऐसी कहानियाँ सुनाई, जिनसे उन्हें अपने धर्म और कर्म का ज्ञान हुआ एवं मार्गदर्शन मिला।

जीजाबाई ने हमेशा महिलाओं की रक्षा एवं मान-सम्मान को बचाने की बात कही थी और यही शिक्षा अपने पुत्र को दी। शिवाजी स्वयं जीजाबाई से युद्ध नीतियाँ सीखा करते थे और उन्हीं की प्रेरणा से उन्होंने अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की। जीजाबाई की मेहनत और संस्कारों की ही वजह से शिवाजी ने हथियार उठाए और स्वराज्य की स्थापना करने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने अनेक अत्याचारियों का वध किया। जीजाबाई का निधन शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 12 दिन बाद हुआ। स्वराज्य स्थापना के सपने को साकार करने के बाद ही उन्होंने प्राण त्यागे थे। जीजाबाई के जीवन पर कुछ फिल्में और टीवी सीरियल भी बने हैं।

घंटों एक ही जगह बैठने से गड़बड़ा रहे हैं हार्मोन्स

स्त्रीरोग विशेषज्ञ डॉ. शालिनी राठौड़ का कहना है कि अधिक समय तक एक ही स्थान पर बैठकर कार्य करने से हार्मोन्स इम्बैलेन्स के कारण महिलाओं में गर्दन दर्द, पीठ दर्द, डायबिटीज, महावारी न आना के साथ-साथ मां बनने का सपना भी टूट रहा है।

कैसे बचा जा सकता है

- लिफ्ट के बजाय सीढ़ी का प्रयोग करें।
- हर आधा घंटे पर थोड़ा आराम करें
- चाय-कॉफी कम लें
- धूम्रपान/एल्कोहॉल का सेवन न करें
- सुबह-शाम वॉक एवं नियमित योग-मेडिटेशन करें।

एसएमएस, जयपुर के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. शशिमोहन शर्मा का कहना है कि लगातार बैठे रहने से हाई ब्लडप्रेशर, कोलेस्ट्रॉल तथा शरीर के अन्य अंगों में खून का बहाव कम होना, गठिया, दिमाग पर असर, मांसपेशियों में कमजोरी जैसी कई परेशानी देखी जा रही है।

गीता- दर्शन

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्।। (17/22)

शास्त्रों में तामस दान किसे कहा गया है इस संदर्भ में श्रीकृष्ण कहते हैं-

जो दान बिना सत्कार के अथवा तिरस्कारपूर्वक अयोग्य व्यक्ति को, गलत देश-काल में कुपात्र के प्रति दिया जाता है, वह दान 'तामस' कहलाता है।

आओ संस्कृत सीखें-20

आप तो जानते थे। **भवान् तु जानाति स्म।**
सभी प्रश्न पूछ रहे थे। **सर्वे प्रश्नं पृच्छन्ति स्म।**

घरेलु नुस्खा

नेत्रज्योति : सौंफ और मिश्री 1-1 चम्मच (बराबर मात्रा में) भोजन के पश्चात खाकर सोना नेत्र ज्योति बढ़ाने में सहायक है। यह प्रयोग 5-6 माह लगातार करना चाहिए।

कुकिंग टिप्स

- आलू उबालते समय उसमें नमक और एक नींबू का टुकड़ा डालकर सीटी लगाएं इससे आलू का छिलका जल्दी निकलेगा और कूकर भी काला नहीं पड़ेगा।

गौरव का क्षण

यूरोप में आयोजित पैरा वर्ल्ड रैंकिंग तीरंदाजी प्रतियोगिता में श्यामसुन्दर स्वामी व राकेश कुमार की युगल जोड़ी ने फ्रांस को हराकर स्वर्ण जीता।

अंतरराष्ट्रीय ओलिंपिक दिवस (23 जून)

खेलों में विश्व स्तर पर प्रत्येक वर्ग और आयु के लोगों की भागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 23 जून, 1948 को पहला अंतरराष्ट्रीय ओलिंपिक दिवस मनाया गया।

राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस (29 जून)

भारतीय सांख्यिकीविद् पीसी महालनोबिस द्वारा आर्थिक योजना व सांख्यिकी के विकास के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान को ध्यान में रखते हुए उनके जन्मदिवस '29 जून' को राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

फिल्म 'केरल स्टोरी' देखने के बाद एक दर्शक की टिप्पणी

माता-पिता को हॉस्टल में रहने वाले अपने बच्चों से लगातार संपर्क बनाए रखना चाहिए। बच्चे समय-समय पर घर आते रहें। माता-पिता भी कभी-कभी हॉस्टल जाकर बच्चों और उनके संगी-साथियों से मिलें। बच्चे चाहें घर पर रहें या हॉस्टल में, उनके साथ माता-पिता का व्यवहार मित्रवत रहना चाहिए। माता-पिता में से किसी एक को बच्चों के साथ इतना निकट का संबंध बनाना चाहिए कि वे अपनी हर अच्छी-बुरी बात उनसे शेयर (साझा) करें जैसे वे अपने मित्रों से शेयर करते हैं। बच्चों के मित्रों को भी समस-समय पर घर पर बुलाते रहना चाहिए। इससे बच्चों को अच्छा लगेगा और माता-पिता को बच्चों की संगत की भी जानकारी मिल सकेगी।

- डॉ. लेखा अग्रवाल (समाजशास्त्री)

जांचें की आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें-
सामान्य- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. युद्धपूर्व रावण को समझाने के लिए श्रीराम का दूत बनकर लंका कौन गया ?
2. अज्ञातवास के समय द्रौपदी ने अपना नाम क्या रखा ?
3. प्राचीन गांधार प्रदेश वर्तमान में किस नाम से जाना जाता है?
4. आद्य शंकराचार्य द्वारा दक्षिण भारत में कौन सा मठ स्थापित किया गया?
5. मातृ-भूमि की महिमा को बखान किस वैदिक-सूक्त में किया गया है ?
6. विजय नगर साम्राज्य की नींव रखने वाले कौन थे?
7. आचार्य वराहमिहिर द्वारा दिल्ली में बनाई गई वेधशाला का वर्तमान में नाम क्या है ?
8. किस क्रांतिकारी को 'सह्याद्रि का सिंह' कहा जाता है?
9. राजस्थान के किस नगर के जमीनी दुर्ग को लोहागढ़ नाम से जाना जाता है?
10. राजस्थान में आउवा का विद्रोह किसके नेतृत्व में हुआ था?

उत्तर पृष्ठ 9 पर

क्या आप जानते हैं?

- भारत में सालाना करीब 35 लाख टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है।

बोधकथा

आखिरी इच्छा

एक महात्मा जंगल से गुजर रहे थे। अचानक सामने डाकुओं का एक दल आ खड़ा हुआ। डाकुओं के सरदार ने महात्मा जी से कड़क कर कहा,'जो भी माल है निकालकर रख दो वरना जान से हाथ धो बैठोगे।' संत ने कहा कि वह तो भिक्षा पर पलने वाले संन्यासी हैं, उनके पास कोई सामान कहां से आएगा। सरदार ने अट्टहास करते हुए कहा कि उनके पास भले ही कुछ और न हो पर जान तो है ही, उसे ही ले लेते हैं। महात्मा जी ने जवाब दिया, 'ठीक है तुम मेरी जान ले लो लेकिन मेरी एक आखिरी इच्छा पूरी कर दो। '

डाकुओं के सरदार ने महात्मा जी से पूछा वे क्या चाहते हैं? महात्मा जी ने कहा, 'सामने के पेड़ से दो पत्ते तोड़ लाओ।' डाकू पत्ते तोड़ लाया और महात्मा जी को देने लगा। महात्मा जी ने कहा ' ये पत्ते मुझे नहीं चाहिए। तुम इन्हें वापस पेड़ पर लगा आओ।' डाकुओं के सरदार ने हैरान होकर कहा,'यह आप क्या कह रहे हैं। कहीं टूटे हुए पत्ते भी दोबारा पेड़ पर लग सकते हैं? यह तो प्रकृति के विरुद्ध है।'

महात्माजी ने समझाते हुए कहा,'यदि तुम टूटी हुई चीजों को जोड़ नहीं सकते तो उसे तोड़ो भी मत। यदि किसी को जीवन नहीं दे सकते तो उसे मृत्यु देने का भी तुम्हें कोई अधिकार नहीं है।' महात्मा जी की बातें सुन कर सरदार की आंखें खुल गई और उसने साथियों के साथ हमेशा के लिए लूटपाट छोड़ने का प्रण कर महात्मा जी से मॉफी मांग कर विदा ली।

बाल प्रश्नोत्तरी - 37

? **जीतें पुरस्कार।** बाल मित्रों, 1 मई का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। 10 से अधिक प्रतियोगियों के उत्तर सही पाए जाने पर निर्णय लॉटरी से होगा। **लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि -20 जून, 2023**

1. 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई है ?
(क) डॉ.अम्बेडकर (ख)डॉ.जावेडकर (ग) डॉ. शिरोडकर (घ) डॉ.हेडगेवार

2. बाबा साहब को अपना सरनेम (अम्बेडकर) देने वाले अध्यापक कौन थे?
(क) विष्णु केशव (ख) कृष्णा केशव (ग) माधव केशव (घ) गोविन्द केशव

3. किस राज्य में डीएमके सरकार ने हाल ही में पथ संचलन पर रोक लगा दी थी?
(क) केरल (ख) तमिलनाडु (ग) असम (घ) राजस्थान

4. 'ब्रज-संवादोत्सव' साहित्य उत्सव राजस्थान के किस जिले में हुआ था ?
(क) सीकर (ख) भरतपुर (ग) जोधपुर (घ) जयपुर

5. 'देवर्षि नारद सम्मान' किस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिया जाता है?
(क) एक्टिंग (ख) लेखन (ग) पत्रकारिता (घ) मॉडलिंग

6. 'डिलिस्टिंग' की मांग को लेकर असम में किस स्थान पर प्रदर्शन हुआ?
(क) गुवाहाटी (ख) तेजपुर (ग) जोरहट (घ) डिब्रूगढ़

7. भारतीय मजदूर संघ के नवीन राष्ट्रीय अध्यक्ष कौन हैं?
(क)विरजेश उपाध्याय (ख)रवीन्द्र हिमते (ग)हिरण्मय पंड्या (घ)संजीनारायण

8. 'संत ईश्वर सम्मान' मेजर एसएन माथुर को कहाँ दिया गया?
(क) हरियाणा (ख) दिल्ली (ग) उत्तर प्रदेश (घ) पंजाब

9. संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में 'मार्कोनी पुरस्कार-2023' किसे दिया गया है?
(क)प्रो.हरिबालाकृष्णन(ख)प्रो.बालाकृष्णन(ग)प्रो. श्यामाकृष्ण(घ) प्रो.मुक्तिप्रसाद

10. 'आजाद हिंद सेना' ने बर्मा पार कर भारत की सीमा में कब प्रवेश किया ?
(क)18मार्च,1944 (ख)18मार्च, 1940 (ग)18मार्च 1942(घ)18मार्च 1945

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी-37)
(अपनी पासपोर्ट फोटो भी वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9.( )
10.( )

नाम .... कक्षा..............
पिता का नाम ....
उम्र .... पूर्ण पता.......................
....
.... पिन.....................
मोबाइल नं. ....

गणित पहेली

दी गई आकृति में त्रिभुजों की कुल संख्या बताइए

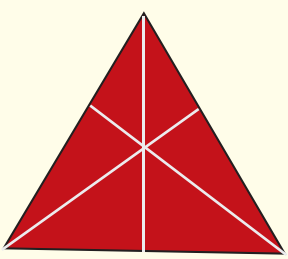

उत्तर : सोलह

वर्ग पहेली

नीचे वर्ग में 10 क्रांतिकारियों के नाम दिए हुए हैं। इनके नाम खोजिए व अपनी बुद्धि का परीक्षण कीजिए।

पे	ई	बा	ती	वं	अ	ल
टो	बा	कुं	ह	ल	जी	या
त्या	क्ष्मी	व	सिं	ह	मु	द
ता	ल	र	ल	सिं	ल्ला	य
दु	र्गा	सिं	शा	त	खां	ज
भा	भी	ह	कु	ग	म	ला
पू	बा	गो	रं	भ	ना	ला

उत्तर: तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई, अवन्तीबाई, लाला जयदयाल, रंगोबापू, कुंवर सिंह, कुशाल सिंह, अजीमुल्ला खां, भगत सिंह, दुर्गा भाभी

पत्रकार सम्मान

अजमेर में आयोजित नारद जयंती पर सम्मानित किए गए पत्रकारों के साथ लेखक एवं टीवी पैनलिस्ट डॉ. रतन शारदा तथा संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री महेन्द्र सिंघल

सिंधी पुस्तक विमोचन

सिंधु दर्शन यात्रा समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुरलीधर माखीजा द्वारा सिंधी बाल संस्कार शिविर पुस्तक का जयपुर में विमोचन। सिंधु सभा के राष्ट्रीय मंत्री श्री महेन्द्र तीर्थाणी, राजस्थान के अध्यक्ष मोहन वाधवाणी, संरक्षक श्री नारायणदास नाजवाणी, श्री विष्णु देव सामताणी आदि उपस्थित थे।

क्षात्र प्रशिक्षण शिविर

श्री क्षत्रिय युवक संघ की ओर से सीकर रोड स्थित भवानी निकेतन परिसर में 11 दिवसीय क्षात्र प्रशिक्षण शिविर आयोजित। 18 से 45 वर्षीय युवाओं को शौर्य, धैर्य, संघर्ष व सभी के प्रति अभिभावक सा स्वभाव रखने का दिया गया प्रशिक्षण।

पंचांग - आषाढ़ (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द 5125, वि.सं. 2080, शाके 1945

5 से 18 जून, 2023 तक

चतुर्थी व्रत- 7 जून, **पंचक प्रारम्भ** -9 जून (प्रातः 6.02 बजे) **पंचक समाप्त** - 13 जून (दोपहर 1.32 बजे तक), **योगिनी एकादशी व्रत-** 14 जून, **प्रदोष व्रत-** 15 जून, **पितृकार्य अमावस्या-** 17 जून, **रोहिणी व्रत (जैन)**-17 जून, **देवकार्य अमावस्या**-18 जून

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 5-6 जून **धनु** राशि में, 7 से 9 जून **मकर** राशि में, 10-11 जून **कुंभ** राशि में, 12-13 जून **मीन** राशि में, 14-15 जून **मेष** राशि में, 16-17 जून उच्च की राशि **वृष** में, तथा 18 जून को **मिथुन** राशि में गोचर करेंगे।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष में **गुरु** व **शनि** यथावत मेष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः पूर्ववत मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **मंगल** व **शुक्र** पूर्ववत कर्क राशि में भ्रमण करेंगे। **सूर्य** 15 जून को सायं 6:16 बजे से मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** 7 जून को सायं 7:44 बजे मेष से वृष राशि में प्रवेश करेंगे।

विशेष : शनि 17 जून को रात्रि में 10:55 बजे कुंभ राशि में रहते हुए वक्री होंगे।

आगामी पक्ष के विशेष अवसर (16 से 30 जून, 2023)

(आषाढ़ कृ.13 से आषाढ़ शु.12 तक)

जन्म दिवस

18 जून (1861) - बाबू देवकीनंदन खत्री जयंती
24 जून (1863) -इतिहासकार काशीनाथ राजवाड़े जयंती
27 जून (1838) -बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जयंती
आषाढ़ शु.10(28जून)- जैनाचार्य जिनदत्त सूरी जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

16 जून(1918) - क्रांतिकारी नलिनी बागची का बलिदान
16 जून (712) - महाराजा दाहिर सेन का बलिदान
17 जून (1674) - माता जीजाबाई की पुण्यतिथि
17 जून (1996) - बालासाहब देवरस की पुण्यतिथि
18 जून (1858) - महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान
18 जून(1576) - हल्दीघाटी युद्ध में झालामान का बलिदान
19 जून (1942) - बालमुकुन्द बिस्सा का बलिदान
21 जून (1940) - डॉ.हेडगेवार की पुण्यतिथि
22 जून (1858) - सेठ अमरचंद बांठिया को फांसी
23 जून (1997) - आचार्य तुलसी की पुण्यतिथि
23 जून (1953) - डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान
24 जून (1564) - महारानी दुर्गावती का बलिदान
27 जून (1963) - दादाराव परमार्थ की पुण्यतिथि
27 जून (1839) - महाराजा रणजीत सिंह की पुण्यतिथि
29 जून (1965) - स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

19 जून (1677) - नेताजी पालकर शुद्धि दिवस
21 जून - अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
23 जून - अंतरराष्ट्रीय ओलिंपिक दिवस
25 जून (1975) - देश में आपातकाल लगा
25 जून (1889) - संघ शाखा पर आतंकी हमला (मोगा, पंजाब)
29 जून - राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

आषाढ़ शु. 2 (20 जून) -श्री जगनाथ रथ यात्रा (ओडिशा)
आषाढ़ शु. 11(29 जून) -पंढरपुर यात्रा प्रारम्भ (महाराष्ट्र)

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

42

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

नेताजी के करिश्माई व्यक्तित्व नेतृत्व को मिल रही सफलताएं भारत की ब्रिटिश सरकार के लिए चुनौती थी वहीं विश्व के शीर्ष राष्ट्र और मीडिया चमत्कृत थे।...आजाद हिन्द सरकार को दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों से अपार समर्थन मिल रहा था... नेशनल बैंक ऑफ आजाद हिन्द की अब तीन शाखाएं खुल चुकी थी... सरकार की अपनी मुद्रा (नोट) चलन में आ गयी थी। भारतीय व्यापारी स्वेच्छा से टैक्स देकर सरकार को सहयोग करने लगे... उधर आजाद हिन्द फौज ..ब्रिटिश सेना से संघर्ष के साथ बढ़ रही थी...

लॉर्ड माउंटबेटन की ब्रिटिश सेना के पास युद्ध सामग्री व सैन्य बल अधिक था किन्तु आजाद हिन्द के जवानों का जज्बा उन पर भारी पड़ रहा था।.. उसी दौरान नेताजी ने रंगून रेडियो से महात्मा गांधी को भावपूर्ण सम्बोधन किया और समर्थन की अपील भी की...

गांधी जी और कांग्रेस से नेताजी को समर्थन नहीं मिला

आजाद हिन्द फौज व जापान की संयुक्त सेना संघर्ष के साथ आगे बढ़ ही रही थी... भारत के बाहर से सक्रिय सहयोग तो भारत में नेताजी की सफलता के लिए लोग प्रार्थना कर रहे थे... तब ही ब्रिटेन के सैन्य बल व हवाई हमले बढ़ते गये और बाजी पलटने लगी।

पाक्षिक
पाथेय कण
(1-15 जून,2023)
(26 मई को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : suryainterview@gmail.com Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना और उन्हें समाजसेवा के काम में जोड़ना।

इन्टरव्यू में चयन हो जाने के बाद सूर्या साधना स्थली कैंपस में छः माह की ट्रेनिंग दी जाएगी। उसके बाद एक साल के लिए On Job Training (OJT) रहेगी।

संघ के संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम युवकों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा–

Post	Experience	6 months Initial Training + 1 year OJT	After Training CTC
CA	IPCC / MTER (2 Yrs Experience)	3 - 4 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	5 - 6 L Per Annum	- do -
	Experienced (upto 5 years)	6 - 8 L Per Annum	- do -
	Experienced (above 5 years)	9 - 12 L Per Annum	-do -
Engineers, Fresher & Experienced	B.Tech (IIT)	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B.Tech (NIT)	4.5 - 6 L Per Annum	- do -
	B.Tech (Other Institutes)	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	M.Tech (IIT)	8.5 - 10 L Per Annum	- do -
	M.Tech (NIT)	5.5 - 7 L Per Annum	- do -
	M.Tech (Other Institutes)	3.6 - 4 L Per Annum	- do -
MBA	MBA (IIT + IIM)	15 L + Per Annum	- do -
	MBA (IIM)	12 - 15 L Per Annum	- do -
	MBA (Other Institutes)	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
Post Graduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. *(Freshers / Experience) Ph.D. **	2 - 3 L Per Annum	- do -
	Mass Communication (Media) - PG	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	2.4 L Per Annum	- do -
	B.Sc, BCA, BBA, BA, B.Com (Persuing / Passed)	1.2 L Per Annum	- do -
	Diploma	1.8 L Per Annum	- do -
Law	LLM	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	LLB	2.4 - 3 L Per Annum	- do -

- उपरोक्त Categories में अधिक प्रतिभाशाली छात्रों को इससे भी अधिक वेतन दे सकते हैं।
- **Ph.D. candidates भी आवेदन कर सकते हैं। Salary interview के दौरान तय होगी।**
- **योग शिक्षक, प्राकृतिक चिकित्सक / उपचारक, Karate Teacher, Music Teacher, Stenographer (Hindi & English), Script Writer (Hindi & English), Data Operator & Clerk भी आवेदन कर सकते हैं। वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा।**

- **Graduate Management Trainee (GMT)**

योग्यता–2023 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। OJT / PCT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA या MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ ही 5,000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 8000/-, 12वीं में 10,000/- Graduation Ist year में 12,000/-, IInd Year में 15,000/-, IIIrd Year में 18,000/-, MBA/MCA Ist Year में 22,000/-, MBA/MCA IInd Year में 27,000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 40000/- और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन / मानधन इससे अधिक भी हो सकता है।

- **Assistant Staff Cadre (ASC)**

योग्यता–2023 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा देने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 55% एवं गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद OJT / PCT में भेजा जायेगा। प्रारंभिक 6 महीने की ट्रेनिंग के दौरान 3000/- प्रतिमाह Stipend मिलेगा तथा मुफ्त भोजन और रहने की व्यवस्था होगी। तीन वर्ष की OJT / PCT के दौरान Stipend - Ist year : 8,000/- प्रतिमाह व आवास, IInd year : 10,000/- प्रतिमाह व आवास, IIIrd year : 12,000/- प्रतिमाह व आवास। After training 15,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

आवेदन हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत बॉयोडाटा के साथ-साथ यदि आपने NCC / NSS / संघ शिक्षा वर्ग / प्राथमिक शिक्षा वर्ग / शीत शिविर / PDC आदि कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें। सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे। सूर्या परिवार में कोई परिचित हो तो उनका नाम, विभाग भी जरूर लिखें। पढ़ाई का विवरण लिखते हुए, Mark sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें।

कृपया विस्तारपूर्वक बायोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर अपना CV / आवेदन भेजें। CV / आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 | Email : suryainterview@gmail.com

आवेदन की अंतिम तिथि : 30 जून 2023

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय नगर, क्षेत्र, मालवीय नगर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 जून,2023 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,
_____
_____
_____